

हिंदी

173

आलोचना
का
विकास

हिन्दुस्तानी दफ्तेरी, मुद्राभाजन
इलाहाबाद

१०००

मुद्राभाजन

१०००

निकष :

‘हिन्दी आलोचना का विकास’ में हिन्दी आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियों, स्वभाव, विषय एवं विस्तार के विवेचन के साथ कुछ प्रमुख आलोचकों का परिचय भी दिया गया है। जिस आलोचना का उद्देश्य बड़ी विस्तार है, ऐसा नहीं है कि वे आलोचना नहीं हैं या ऐसा उनके प्रति मनमाना का मान है। उन सभी का हिन्दी आलोचना के विकास में योगदान है, यह निश्चित है। विवेचन करते समय इस बात का ध्यान रखा गया है कि जो कुछ भी कहा जाए, समझता और समझता के कहा जाए। अन्ततः एक ही बात और उचित करने की प्रवृत्ति के कारण हमने का प्रयत्न किया गया है। ज्ञात है, कुछक साहित्य क्षेत्रों एवं विचारों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

प्रथम भी अतीत महापुरुष सिंह की का कृत्य है, जिन्होंने समय-समय पर लगे बड़ी योगदान की है। उनके परिचय एवं अध्ययन से ही बहुत प्रभावित हुआ है। दूसरी श्रेणी विवेक, दूसरी श्रेणी अन्ततः और भी कुछक लोग कहेंगे वे प्रेरणा काही तैयार करने एवं अनुभवगतता बनाने में बड़ी बड़ी योगदान की है—पर वे सब होने वाले निकट है कि सम्भवतः क्या नूँ ? वे सभी बड़ी हार्दिक धूम आत्मिकों के पास हैं।

उस सभी लेखकों के प्रति आभारी हूँ, जिसकी पुस्तकों के अध्ययन की गई है। हिन्दी साहित्य सम्प्रदाय प्रकाश के सहयोग मूल के कार्यवाहियों, विशेषतः समय कलाकार बार्डें, योगदान की महत्त्व, भी प्रमुख प्रकाश दिनेश तथा भी साहित्य लेखकों का कृत्य है, जिन्होंने पुस्तकों की व्यवस्था कर लगे बड़ी महत्त्व की है। जिना उनके अध्ययन के पुस्तक का पूर्ण होता बनने नहीं था।

विद्वान्महोदयों एवं कवयित्री, श्री १५

कल्पना,

१५ पुनःप्रकाशनकर, विद्वान्महोदय

इमहावाद—३

—सुरेश सिन्हा

बिन्दुमे बेदी किमी दृष्टत पर कभी
बहुल नहीं लगाना, नीब अपने
बिंदु गुप्त गेह से करीब
कुछ दिना एक
समर्पण प्रदान
की

उन्नी
सामो-सामर
समर्थ साधार्म जी- सामी सागर की बाष्पीय
की सागर

विषय सूची

पृष्ठ सं.	विषय	पृष्ठ सं.
अध्याय १ : विषय एवं विस्तार		
	आलोचना क्या है	१
	आलोचना का उद्देश्य	६४
	आलोचना और साहित्य कृति	६५
	आलोचना का स्वरूप	६४
अध्याय २ : भारतीय काव्य शास्त्र के सिद्धान्त		
	रस सिद्धान्त	६७
	रसिक सिद्धान्त	६९
	रसकार सिद्धान्त	७१
	रसिक सिद्धान्त	७२
	रसोक्ति सिद्धान्त	७३
अध्याय ३ : काव्यशास्त्र आलोचना सिद्धान्त		
	समुद्रति सिद्धान्त	७४
	संस्कृत का सिद्धान्त	७५
	संस्कृतशास्त्र	७६
	संस्कृतशास्त्र	७७
	संस्कृतशास्त्र	७८
	संस्कृतशास्त्र	७९
	संस्कृतशास्त्र	८०
	संस्कृतशास्त्र	८१
	संस्कृतशास्त्र	८२
अध्याय ४ : आलोचना प्रकार		
	ऐतिहासिक आलोचना प्रकार	८३
	सांस्कृतिक आलोचना प्रकार	८४
	सांस्कृतिक आलोचना प्रकार	८५
	ऐतिहासिक आलोचना प्रकार	८६
	ऐतिहासिक आलोचना प्रकार	८७

पृ.सं.	विषय	पृ.सं.
	सुनवायक आलोचना उपानी	५१
	लीनन सुनवायक आलोचना उपानी	५२
	सुनवायक आलोचना उपानी	५३
	सुनवायक आलोचना उपानी	५४
	सुनवायक आलोचना उपानी	५५
	सुनवायक आलोचना उपानी	५६
	सुनवायक आलोचना उपानी	५७
	सुनवायक आलोचना उपानी	५८
	सुनवायक आलोचना उपानी	५९
	सुनवायक आलोचना उपानी	६०
	सुनवायक आलोचना उपानी	६१
	सुनवायक आलोचना उपानी	६२
	सुनवायक आलोचना उपानी	६३
	सुनवायक आलोचना उपानी	६४
	सुनवायक आलोचना उपानी	६५
	सुनवायक आलोचना उपानी	६६
	सुनवायक आलोचना उपानी	६७
	सुनवायक आलोचना उपानी	६८
	सुनवायक आलोचना उपानी	६९
	सुनवायक आलोचना उपानी	७०

अध्याय २ : हिन्दी आलोचना का विकास

आलोचना का विकास	७१
आलोचना का विकास	७२
आलोचना का विकास	७३

अध्याय ३ : साहित्य का : आलोचना विज्ञान

साहित्य—साहित्य का विकास	७४
साहित्य और विज्ञान	७५
साहित्य और विज्ञान	७६
साहित्य और विज्ञान	७७
साहित्य—साहित्य और विज्ञान	७८
साहित्य का विकास	७९
साहित्य का विकास	८०
साहित्य और विज्ञान	८१
साहित्य के विज्ञान	८२
साहित्य का विकास	८३
साहित्य का विकास	८४
साहित्य का विकास	८५
साहित्य का विकास	८६
साहित्य का विकास	८७
साहित्य का विकास	८८
साहित्य का विकास	८९
साहित्य का विकास	९०
साहित्य का विकास	९१
साहित्य का विकास	९२
साहित्य का विकास	९३
साहित्य का विकास	९४
साहित्य का विकास	९५
साहित्य का विकास	९६
साहित्य का विकास	९७
साहित्य का विकास	९८
साहित्य का विकास	९९
साहित्य का विकास	१००

विषय एवं विस्तार

आलोचना क्या है

‘आलोचना’ शब्द ‘गुण’ शब्द से बना है : ‘गुण’ का अर्थ है ‘वैभव’ : इसी दृष्टि से यह शब्द विद्वान् मानता है कि किसी कृति की वैभवा : वैभवा से अभिप्राय है उसकी महत्ता : यद्यपि एक समान गुणवाचक शब्द : आलोचना के अनुसार आलोचना की अभिप्राय यदि सर्व की उन्नति से करने की दृष्टिकोण पर विचार करती है : आलोचना एक कृति की महत्ता से और दूसरी विवेक-शक्ति से समझती की गयीता मानता है : यह ‘वैभवा’ शब्द की ‘आलोचना’ के ही समझी जाता है : आलोचना ही वह शब्द है, जो कला का जीवन के अन्तर्गत महत्त्व अभिव्यक्ति करती है : आलोचना यहाँ से कोई विश्व चीज नहीं है, बल्कि वह विशिष्ट रूप से कला के सम्बन्ध है : कला का कला जीवन एवं विश्वासे तथा जीवन के उसकी महत्ता का आलोचना करने का कार्य आलोचना करती है : अभिव्यक्ति से के अन्तर्गत जीवन की महत्ता कला का

—“The term criticism, however, has usually denoted the capacity of judgment, and this capacity is necessarily concerned with the art of the critic which is in some broadly employed. The literary critic is therefore regarded primarily as an expert who brings a special faculty and training to bear upon the literary art, or the work of a given author, and whose function is to make an intelligent, and purposeful, use of the critical power.”

—“विचार करने की दृष्टिकोण से यह शब्द का अर्थ है, जो कला की विशिष्टता (गर्व १९६०), अन्तर्गत, गुण १६।

[illegible]

1. **Introduction**

4. **Answer:** *Chlorophyll a*

Circumstance	Percentage of respondents (%)
If someone is attacking you	85
If someone is threatening you	75
If someone is harassing you	65
If someone is insulting you	55
If someone is annoying you	45

[illegible]

१.—जीवाभर, सुपुत्र, ११, पञ्चमोदय, कर्माभरण, नीलम, के, निरुद्धि.

12/15/97, 12/16/97, 12/17/97, 12/18/97, 12/19/97, 12/20/97, 12/21/97, 12/22/97, 12/23/97, 12/24/97, 12/25/97, 12/26/97, 12/27/97, 12/28/97, 12/29/97, 12/30/97, 12/31/97, 1/1/98, 1/2/98, 1/3/98, 1/4/98, 1/5/98, 1/6/98, 1/7/98, 1/8/98, 1/9/98, 1/10/98, 1/11/98, 1/12/98, 1/13/98, 1/14/98, 1/15/98, 1/16/98, 1/17/98, 1/18/98, 1/19/98, 1/20/98, 1/21/98, 1/22/98, 1/23/98, 1/24/98, 1/25/98, 1/26/98, 1/27/98, 1/28/98, 1/29/98, 1/30/98, 1/31/98, 2/1/98, 2/2/98, 2/3/98, 2/4/98, 2/5/98, 2/6/98, 2/7/98, 2/8/98, 2/9/98, 2/10/98, 2/11/98, 2/12/98, 2/13/98, 2/14/98, 2/15/98, 2/16/98, 2/17/98, 2/18/98, 2/19/98, 2/20/98, 2/21/98, 2/22/98, 2/23/98, 2/24/98, 2/25/98, 2/26/98, 2/27/98, 2/28/98, 2/29/98, 3/1/98, 3/2/98, 3/3/98, 3/4/98, 3/5/98, 3/6/98, 3/7/98, 3/8/98, 3/9/98, 3/10/98, 3/11/98, 3/12/98, 3/13/98, 3/14/98, 3/15/98, 3/16/98, 3/17/98, 3/18/98, 3/19/98, 3/20/98, 3/21/98, 3/22/98, 3/23/98, 3/24/98, 3/25/98, 3/26/98, 3/27/98, 3/28/98, 3/29/98, 3/30/98, 3/31/98, 4/1/98, 4/2/98, 4/3/98, 4/4/98, 4/5/98, 4/6/98, 4/7/98, 4/8/98, 4/9/98, 4/10/98, 4/11/98, 4/12/98, 4/13/98, 4/14/98, 4/15/98, 4/16/98, 4/17/98, 4/18/98, 4/19/98, 4/20/98, 4/21/98, 4/22/98, 4/23/98, 4/24/98, 4/25/98, 4/26/98, 4/27/98, 4/28/98, 4/29/98, 4/30/98, 5/1/98, 5/2/98, 5/3/98, 5/4/98, 5/5/98, 5/6/98, 5/7/98, 5/8/98, 5/9/98, 5/10/98, 5/11/98, 5/12/98, 5/13/98, 5/14/98, 5/15/98, 5/16/98, 5/17/98, 5/18/98, 5/19/98, 5/20/98, 5/21/98, 5/22/98, 5/23/98, 5/24/98, 5/25/98, 5/26/98, 5/27/98, 5/28/98, 5/29/98, 5/30/98, 5/31/98, 6/1/98, 6/2/98, 6/3/98, 6/4/98, 6/5/98, 6/6/98, 6/7/98, 6/8/98, 6/9/98, 6/10/98, 6/11/98, 6/12/98, 6/13/98, 6/14/98, 6/15/98, 6/16/98, 6/17/98, 6/18/98, 6/19/98, 6/20/98, 6/21/98, 6/22/98, 6/23/98, 6/24/98, 6/25/98, 6/26/98, 6/27/98, 6/28/98, 6/29/98, 6/30/98, 7/1/98, 7/2/98, 7/3/98, 7/4/98, 7/5/98, 7/6/98, 7/7/98, 7/8/98, 7/9/98, 7/10/98, 7/11/98, 7/12/98, 7/13/98, 7/14/98, 7/15/98, 7/16/98, 7/17/98, 7/18/98, 7/19/98, 7/20/98, 7/21/98, 7/22/98, 7/23/98, 7/24/98, 7/25/98, 7/26/98, 7/27/98, 7/28/98, 7/29/98, 7/30/98, 7/31/98, 8/1/98, 8/2/98, 8/3/98, 8/4/98, 8/5/98, 8/6/98, 8/7/98, 8/8/98, 8/9/98, 8/10/98, 8/11/98, 8/12/98, 8/13/98, 8/14/98, 8/15/98, 8/16/98, 8/17/98, 8/18/98, 8/19/98, 8/20/98, 8/21/98, 8/22/98, 8/23/98, 8/24/98, 8/25/98, 8/26/98, 8/27/98, 8/28/98, 8/29/98, 8/30/98, 8/31/98, 9/1/98, 9/2/98, 9/3/98, 9/4/98, 9/5/98, 9/6/98, 9/7/98, 9/8/98, 9/9/98, 9/10/98, 9/11/98, 9/12/98, 9/13/98, 9/14/98, 9/15/98, 9/16/98, 9/17/98, 9/18/98, 9/19/98, 9/20/98, 9/21/98, 9/22/98, 9/23/98, 9/24/98, 9/25/98, 9/26/98, 9/27/98, 9/28/98, 9/29/98, 9/30/98, 10/1/98, 10/2/98, 10/3/98, 10/4/98, 10/5/98, 10/6/98, 10/7/98, 10/8/98, 10/9/98, 10/10/98, 10/11/98, 10/12/98, 10/13/98, 10/14/98, 10/15/98, 10/16/98, 10/17/98, 10/18/98, 10/19/98, 10/20/98, 10/21/98, 10/22/98, 10/23/98, 10/24/98, 10/25/98, 10/26/98, 10/27/98, 10/28/98, 10/29/98, 10/30/98, 10/31/98, 11/1/98, 11/2/98, 11/3/98, 11/4/98, 11/5/98, 11/6/98, 11/7/98, 11/8/98, 11/9/98, 11/10/98, 11/11/98, 11/12/98, 11/13/98, 11/14/98, 11/15/98, 11/16/98, 11/17/98, 11/18/98, 11/19/98, 11/20/98, 11/21/98, 11/22/98, 11/23/98, 11/24/98, 11/25/98, 11/26/98, 11/27/98, 11/28/98, 11/29/98, 11/30/98, 12/1/98, 12/2/98, 12/3/98, 12/4/98, 12/5/98, 12/6/98, 12/7/98, 12/8/98, 12/9/98, 12/10/98, 12/11/98, 12/12/98, 12/13/98, 12/14/98, 12/15/98, 12/16/98, 12/17/98, 12/18/98, 12/19/98, 12/20/98, 12/21/98, 12/22/98, 12/23/98, 12/24/98, 12/25/98, 12/26/98, 12/27/98, 12/28/98, 12/29/98, 12/30/98, 12/31/98, 1/1/99, 1/2/99, 1/3/99, 1/4/99, 1/5/99, 1/6/99, 1/7/99, 1/8/99, 1/9/99, 1/10/99, 1/11/99, 1/12/99, 1/13/99, 1/14/99, 1/15/99, 1/16/99, 1/17/99, 1/18/99, 1/19/99, 1/20/99, 1/21/99, 1/22/99, 1/23/99, 1/24/99, 1/25/99, 1/26/99, 1/27/99, 1/28/99, 1/29/99, 1/30/99, 1/31/99, 2/1/99, 2/2/99, 2/3/99, 2/4/99, 2/5/99, 2/6/99, 2/7/99, 2/8/99, 2/9/99, 2/10/99, 2/11/99, 2/12/99, 2/13/99, 2/14/99, 2/15/99, 2/16/99, 2/17/99, 2/18/99, 2/19/99, 2/20/99, 2/21/99, 2/22/99, 2/23/99, 2/24/99, 2/25/99, 2/26/99, 2/27/99, 2/28/99, 2/29/99, 3/1/99, 3/2/99, 3/3/99, 3/4/99, 3/5/99, 3/6/99, 3/7/99, 3/8/99, 3/9/99, 3/10/99, 3/11/99, 3/12/99, 3/13/99, 3/14/99, 3/15/99

2—"The ultimate end of criticism is much more to establish principles of writing than to furnish rules upon which to judge or what has been written by others."

[illegible][illegible]

हो भारतीय, राष्ट्रीय, जाति जाती का विशेष और असाधारण विषय है और राष्ट्रीय जातीयवाद के लिए यह अभिप्राय है कि यह इन दोनों का विशिष्टता करने ।¹ जातीय के जातीयता का सबसे बड़ा गुण यह होता है कि उसे अपने विश्व की पूर्ण जाणकारी हो । बिना इसके यह अपनी जातीयता के साथ साथ नहीं कर सकते - जातीयता का यह उच्चतम स्तर होता है कि यह पूर्णतः ही के गुण हो, पूर्णतः ही जाणकारी न हो और अपनी पूर्ण जाणकारी हो यह किसी भी चीज का हो, किसी भी चीज में जाणकारी विषयता एकरा हो, यह जातीयता अपने अपने जैसे विषयता होता पादित । यह असाधारण जाड़े जाड़े करने के विद्यमान के केव एकरा हो या नहीं । जातीयता का स्तर है कि यह किसी असाधारण में अपने अपने के विद्यमान का नहीं, सीधे जाती का असाधारण का अभिप्राय करे । जातीयता द्वारा विश्व यह अभिप्राय करे हो राष्ट्रीय समुदाय होता है ।

1 "The truth is that even if the individuality is unique it does not mean that it cannot be analysed. Individuality is a welding together of tribal-national class temporary and institutional elements and in fact it is in the uniqueness of this welding together in the proportion of this psycho-chemical mixture, that individuality is expressed. One of the most important tasks of criticism is to analyse the individuality of artist into its component elements and to show this combination."

—द्वितीय : सिद्धांत एवं विशिष्टता, पृष्ठ ६४-६५

[illegible]

Figure 1

रीति सम्प्रदाय के सम्यक् ज्ञानार्थी मानते हैं। व्यवहार, विद्याया की प्रतिक्रिया समान ही रीति विधानों का परिचयन हुआ था। अतः ही व्यवहार-वादिनों के मत का समर्थन करते हुए रीति को मान्य भी मानकर स्वीकार किया। अतः ही जहाँ भी विधिक प्रकाश को ही रीति माना।

विद्यार्थी या स्वयंसेवक शीतः

[illegible]

अविनाश (हो) अपने कै. उपायों से कि विनाश, मनुष्य (हो) क्या और की-
की। अविनाश वही है जो अविनाश की रूप में है।

2000 2001 2002 2003 2004 2005 2006 2007 2008 2009 2010 2011 2012 2013 2014 2015 2016 2017 2018 2019 2020 2021 2022 2023 2024 2025 2026 2027 2028 2029 2030 2031 2032 2033 2034 2035 2036 2037 2038 2039 2040 2041 2042 2043 2044 2045 2046 2047 2048 2049 2050 2051 2052 2053 2054 2055 2056 2057 2058 2059 2060 2061 2062 2063 2064 2065 2066 2067 2068 2069 2070 2071 2072 2073 2074 2075 2076 2077 2078 2079 2080 2081 2082 2083 2084 2085 2086 2087 2088 2089 2090 2091 2092 2093 2094 2095 2096 2097 2098 2099 2100 2101 2102 2103 2104 2105 2106 2107 2108 2109 2110 2111 2112 2113 2114 2115 2116 2117 2118 2119 2120 2121 2122 2123 2124 2125 2126 2127 2128 2129 2130 2131 2132 2133 2134 2135 2136 2137 2138 2139 2140 2141 2142 2143 2144 2145 2146 2147 2148 2149 2150 2151 2152 2153 2154 2155 2156 2157 2158 2159 2160 2161 2162 2163 2164 2165 2166 2167 2168 2169 2170 2171 2172 2173 2174 2175 2176 2177 2178 2179 2180 2181 2182 2183 2184 2185 2186 2187 2188 2189 2190 2191 2192 2193 2194 2195 2196 2197 2198 2199 2200 2201 2202 2203 2204 2205 2206 2207 2208 2209 2210 2211 2212 2213 2214 2215 2216 2217 2218 2219 2220 2221 2222 2223 2224 2225 2226 2227 2228 2229 2230 2231 2232 2233 2234 2235 2236 2237 2238 2239 2240 2241 2242 2243 2244 2245 2246 2247 2248 2249 2250 2251 2252 2253 2254 2255 2256 2257 2258 2259 2260 2261 2262 2263 2264 2265 2266 2267 2268 2269 2270 2271 2272 2273 2274 2275 2276 2277 2278 2279 2280 2281 2282 2283 2284 2285 2286 2287 2288 2289 2290 2291 2292 2293 2294 2295 2296 2297 2298 2299 2300 2301 2302 2303 2304 2305 2306 2307 2308 2309 2310 2311 2312 2313 2314 2315 2316 2317 2318 2319 2320 2321 2322 2323 2324 2325 2326 2327 2328 2329 2330 2331 2332 2333 2334 2335 2336 2337 2338 2339 2340 2341 2342 2343 2344 2345 2346 2347 2348 2349 2350 2351 2352 2353 2354 2355 2356 2357 2358 2359 2360 2361 2362 2363 2364 2365 2366 2367 2368 2369 2370 2371 2372 2373 2374 2375 2376 2377 2378 2379 2380 2381 2382 2383 2384 2385 2386 2387 2388 2389 2390 2391 2392 2393 2394 2395 2396 2397 2398 2399 2400 2401 2402 2403 2404 2405 2406 2407 2408 2409 2410 2411 2412 2413 2414 2415 2416 2417 2418 2419 2420 2421 2422 2423 2424 2425 2426 2427 2428 2429 2430 2431 2432 2433 2434 2435 2436 2437 2438 2439 2440 2441 2442 2443 2444 2445 2446 2447 2448 2449 2450 2451 2452 2453 2454 2455 2456 2457 2458 2459 2460 2461 2462 2463 2464 2465 2466 2467 2468 2469 2470 2471 2472 2473 2474 2475 2476 2477 2478 2479 2480 2481 2482 2483 2484 2485 2486 2487 2488 2489 2490 2491 2492 2493 2494 2495 2496 2497 2498 2499 2500 2501 2502 2503 2504 2505 2506 2507 2508 2509 2510 2511 2512 2513 2514 2515 2516 2517 2518 2519 2520 2521 2522 2523 2524 2525 2526 2527 2528 2529 2530 2531 2532 2533 2534 2535 2536 2537 2538 2539 2540 2541 2542 2543 2544 2545 2546 2547 2548 2549 2550 2551 2552 2553 2554 2555 2556 2557 2558 2559 2560 2561 2562 2563 2564 2565 2566 2567 2568 2569 2570 2571 2572 2573 2574 2575 2576 2577 2578 2579 2580 2581 2582 2583 2584 2585 2586 2587 2588 2589 2590 2591 2592 2593 2594 2595 2596 2597 2598 2599 2600 2601 2602 2603 2604 2605 2606 2607 2608 2609 2610 2611 2612 2613 2614 2615 2616 2617 2618 2619 2620 2621 2622 2623 2624 2625 2626 2627 2628 2629 2630 2631 2632 2633 2634 2635 2636 2637 2638 2639 2640 2641 2642 2643 2644 2645 2646 2647 2648 2649 2650 2651 2652 2653 2654 2655 2656 2657 2658 2659 2660 2661 2662 2663 2664 2665 2666 2667 2668 2669 2670 2671 2672 2673 2674 2675 2676 2677 2678 2679 2680 2681 2682 2683 2684 2685 2686 2687 2688 2689 2690 2691 2692 2693 2694 2695 2696 2697 2698 2699 2700 2701 2702 2703 2704 2705 2706 2707 2708 2709 2710 2711 2712 2713 2714 2715 2716 2717 2718 2719 2720 2721 2722 2723 2724 2725 2726 2727 2728 2729 2730 2731 2732 2733 2734 2735 2736 2737 2738 2739 2740 2741 2742 2743 2744 2745 2746 2747 2748 2749 2750 2751 2752 2753 2754 2755 2756 2757 2758 2759 2760 2761 2762 2763 2764 2765 2766 2767 2768 2769 2770 2771 2772 2773 2774 2775 2776 2777 2778 2779 2780 2781 2782 2783 2784 2785 2786 2787 2788 2789 2790 2791 2792 2793 2794 2795 2796 2797 2798 2799 2800 2801 2802 2803 2804 2805 2806 2807 2808 2809 2810 2811 2812 2813 2814 2815 2816 2817 2818

सर्वोच्च शिक्षा के क्षेत्र में हमारी मुख्य चुनौतियाँ हैं : हमें सर्वोच्च को ही सबसे अधिक प्राथमिकता देनी है ; हमें विश्व स्तर पर सर्वोच्च को सबसे अधिक प्राथमिकता देनी है ; हमें विश्व स्तर पर सर्वोच्च को सबसे अधिक प्राथमिकता देनी है ;

ગાજાણી માધ્યમશાળાની માધ્યમ બોલિંગ ટીમના સભ્યોની તારતમ્ય

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

संवेगैरहित कुली पर बन गया है, उन्होंने वादित्व और जीवन के अतिविपक्ष सम्बन्ध स्वीकार किया है, क्योंकि उसका सम्बन्धन जीवन के ही होता है, और वह जीवन के विरुद्ध ही बना जाता है। उसकी आलोचना दुष्टि मान्यतावादी है। उसके अनुसार कला और वादित्व की जीवन की उपवेष्टिता है अलग करते केवल और तब पर विचार किसी कारणवश है, सर्वशून्य है, उसका कारण स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा है कि कला और वादित्व की अनुकूलिता की जीवन की अन्य अनुकूलियों के समान होती है। कला वास्तव में विरोध, अविचार का विरक्षण करती है। केवल अन्तरित के तब वह विचार का कि अविचार जीवन की आलोचना होती है, जो विचार ही वह विरोध कला अपने मन में वह विचार रहा होता कि वह एक ऐसा उपन है, जो वादित्व के अंदर ही अंतर्धीन रहा है। क्योंकि वह तब पूर्णतया टूटता है। आलोचना कुली का विरोधक होता है। कलाकार का मुख्य कार्यवाही है कि वह अपने द्वारा सर्वाधिक सुखदायक करने वाले कलाकृतियों की अधिकतम देकर सर्वाधिक प्रभाव करे। केवल कलाकार ही ऐसा ऐसा व्यक्ति होता है, जिसके पास ऐसे सुखदायक कलाकृतियों के देने की संभावना अधिक होती सकती है, जिसका सम्बन्ध कला का सम्बन्ध है। 'कलाकार वह व्यक्ति है, यहाँ मन का विचार सुखदायी करता है। उसकी अनुकूलियों में—मन के तब तब अनुकूलियों में, जो उसकी प्रति की सुखदायक करती है—ऐसे आलोचकों का सम्बन्धन अधिक होता है, जो अविचार को भी के मन में कला केवल, वास्तव अन्तर्धीन कला अन्तर्धीन कहा करते हैं। जो कुछ अविचार को भी के मन में अन्तर्धीन मन में विरक्षण होता है उसकी प्रति करी की सम्बन्धन होती है। यदि कलाकार में के सम्बन्ध का विचार करने में उसकी विचारदायक मन को भी की अन्तर्धीन अधिक परिष्कृत हो जाती है जो उसका कारण—मन के तब कुछ हद तक—मनकार का अन्तर्धीन कादित्व होता है। वह उसकी अनुकूल का तब वह उसकी अन्तर्धीन अधिक सम्बन्ध का परिणाम होता है। यद्यपि तब वह तब होता है, जो उसकी विधि का सुख अन्तर्धीन सम्बन्ध में होता होता है, जिसके सम्बन्धन अतिविपक्ष तब विचारविपक्ष की अविचार सम्बन्धनों की अनुकूलता होती है।¹⁷

वास्तविक तब यह विवेचना की गयी कि क्या विचारक जति स्थिति में है। वास्तविक या वास्तविक तब के स्थिति के एक स्थिति की जति की स्थिति में है। और यह स्थिति विचारक अपनी स्थिति है।

जो चीन राजा के जीवन तथा सामाजिक दृष्टिकोण की जीवन गहराई बढ़ी प्रदान करते हैं। जो उनको समझना तथा की कला मान्य दृष्टि प्रदान करते हैं—विचारों के ऐसे विकासों की समीक्षाएँ पर तथा अन्तर्गत जादू करते हैं। यह राज्य के जीवन के विविध दृष्टि पर समीक्षा समझ प्रदान करते हैं। राजा ही यह भी समझाते करते हैं कि राजकी गहराई के अन्तर्गत में सामाजिक जागरण की समीक्षा किया जा सकता है। उनके समझदार दृष्टि की समीक्षा समीक्षा यह है कि मानव की छोटी से छोटी पर बहुत प्रभावकारी दृष्टि की दृष्टि किन्तु किन्तु एकता समझना किन्तु-किन्तु समझनों के किन्तु जादू, किन्तु के जागरण तथा के समीक्षा का समझना करते हैं। राजा ही के यह भी समझते हैं कि उनके के समीक्षा समझना जीवन समझना कर सकते हैं। दृष्टिओं के समीक्षा समझना समझना समझना ही समझना है। यह उनके जादू समझ की समझ समझने समझना कर के समझना है। इसी समझना समझने के समझना की समझना समझना ही समझना है। समझना के किन्तु के किन्तु सामाजिक समझना की समझना तथा समझना के समझना के ही समझना ही समझना है। इस समझ विचारों के समझ की समझने एक और समझना समीक्षाएँ पर जागरण है, समझने जो यह जो यह समझने के की समझना कर में समझना है। समझने यह समझ समझने, समझ तथा समझ के समझना समझना ही ही समझने है। समझने यह समझना समझने की समझने के समझना किन्तु है।

अविद्या-वर्तमान के विद् की सम्मति के विचारों के यह विचार निकला है : एक, वह अनुसूचित अपने आप में कार्य है, अपनी सत्ता के कारण पर अनुसूचित है और उसका अपने आप में सुख है : दूसरे वह विद्वत् सत्ता ही उसका कारण सुख है : तदनुसूचित का तब के समय के मन के साथ का विशेष सुख की ही सम्मति है—अर्थात् यह विचार देना है, यहाँ

Einmal mehr: Festsitzende Holzbohlen auf leichtem Unterbau

पर अत्यन्त हीना साहित्य । किन्तु इसी आलोचना पर एकरा के साथ साथ बहुत कर देनेवा और उसकी साहित्यका समीक्षण नहीं होती । साहित्य का सम्बन्ध सभी समय बहुत कम से ही नहीं मान में रखी जाती है । दूसरी है साहित्य की कमी (Deficiency) मानना , और दूसरी उस मानना की पुनर्पुनः परिशीलन पैदा करने की प्रवृत्ति । साहित्य किसी व्यक्ति की आत्मा के साक्षात्कार करता है । इस प्रकार ऐतिहासिक आलोचना अपनी साक्षात्कार तथा वेदनाओं का दूसरी विवरण अपने अपने एक-एक आलोचना दक्षिण में प्रकाश होती है ।

एक आलोचना अपनी का प्रयोग बहुत कम से दूसरी साहित्य के बहुत ऐतिहासिक विचार में के किया है । इन के साहित्य के सम्बन्ध के विद् हीन सभी का विवेचन समझ माना है । नाटिक (Drama), पद्य (Poetry), और कथन किन्तु (Narrative) । इन के इस विचार के मत-सम्मत साहित्य-लोचन की सभी मानसुक्ति प्राप्त हुई और सभी परिचित-विद् में जारी देनेवा की पुनर्पुनः में साहित्य का साहित्य सम्बन्ध सभी की हीना प्राप्त हुई । एक व्यक्ति एक साहित्य की एकता मानता है, जो उसकी एकता हीना पर उसकी सभी हीना और सम्बन्ध का समीक्षण हीना प्रकाश है । उस सम्बन्ध का वह साहित्य की नहीं बना रहता । इसके अति-रिक्त औपनिषद्, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन की सीमाओं की भी वह परिभाषा नहीं कर पाता और सभी सीमाओं के समस्त वह सभी एकता हीना अपने सम्बन्ध बहुत कम हीना होता है । समस्त सभी विविध रूपों के साहित्य सम्बन्धों में अन्तर का परिभाषा होता है । अन्त में किसी एक, किसी सम्बन्ध की औपनिषद्, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पुनर्पुनः अन्तरों में किसी एक सम्बन्ध की दूसरी सम्बन्ध की पुनर्पुनः के विचार कम से कम होती । ऐतिहासिक आलोचना पद्धति में सभी का बहुत कम के समस्त एकता जाता है और सभी के आधार पर समीक्षा होती है । इन के अनुसार सुलेख विद्या में विचार परिशीलन होता रहता है । वह विचार (Thought) नहीं है, बल्कि परिशीलन है । पुनः-वेदनाएं साथ में किसी एक सम्बन्धों की परिनिष्ठितों एवं साक्षात्कार साथ किसी सभी सभी सम्बन्धों की परिनिष्ठितों एवं साक्षात्कार के बहुत कुछ विचार है । 'सांस्कृतिक सम्बन्ध' और 'सांस्कृतिक' से जो दूसरी दृष्टि के सम्बन्ध है । वह सुलील विद्या की परिनिष्ठितों तथा या ही परिभाषा है । इन के अनुसार दूसरी-विचार, परिनिष्ठित और कथन किन्तु की पुनर्पुनः पर

दार्ष्टिक की रचना अधिक होती है।^१ दार्ष्टिक की आलोचना करते समय हम छोटी चर्चा के साथ मौलिक चर्चाओं द्वारा ही और बड़ी पर किसी प्रकार का विशिष्ट एक अवलोकन प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करते हैं। ऐतिहासिक दार्ष्टिक किसी प्रकार का व्यवसाय की मुख्य परिमितता के अन्तर्गत प्रकाशित करना चाहता है। वह उसका मुख्य कार्य छोटी परिमितता के अन्तर्गत के एक चर्चा के लिए करना है। दूसरी ओर यह भी कि किसी रचना के गुण के दार्ष्टिक, दार्ष्टिक एक दार्ष्टिक अन्तर्गत पर अन्तर्गत किन चीजों के साथ है। यदि वह अन्तर्गत अन्तर्गत है तो किन्हीं ही वह गुण के साथ है। और यदि नहीं तो वह गुण के साथ है।

यह वह एक ही रचना का अन्तर्गत है कि ऐतिहासिक आलोचना अन्तर्गत के अन्तर्गत का ऐतिहासिक दार्ष्टिक की अवलोकन है। ऐतिहासिक अन्तर्गत की अवलोकन की दार्ष्टिक ही वह एक रचना, पर अन्तर्गत ऐतिहासिक आलोचना अन्तर्गत है। (ऐतिहासिक की अन्तर्गत के किसी की दार्ष्टिक ही का अन्तर्गत आलोचना की नहीं है। अन्तर्गत।) ऐतिहासिक और आलोचना का अन्तर्गत के अन्तर्गत है और वह अन्तर्गत ही कि किन्हीं ऐतिहासिक आलोचना की ही।^२ इस आलोचना अन्तर्गत का अन्तर्गत अन्तर्गत कि किसी ऐतिहासिक का अन्तर्गत ही कि अन्तर्गत अन्तर्गत है। अन्तर्गत ही कि अन्तर्गत है कि इस दार्ष्टिक के अन्तर्गत किसी रचना की अन्तर्गत अन्तर्गत

1. "It was perceived that a work of literature is not a mere play of imagination, a solitary caprice of a brain's brain, but a manuscript of contemporary manners, a type of a certain kind of novel."

—लेख. द्वितीय और द्वितीय द्वितीय, द्वितीय, द्वितीय।

2. "The historian of a literature must be distinguished from the critic of literature. The task of research among the remains of a literary period is distinct from the task of estimating those remains for what they may be historically worth. A literary historian who may do invaluable work in compiling, editing, annotating, editing is not a very good critic."

—लेख. द्वितीय : द्वितीय और द्वितीय, द्वितीय, द्वितीय।

आत्मतत्त्वमय आलोचना प्रणाली

आत्मतत्त्वमय आलोचना प्रणाली (Introspective-criticism system) का जन्म जर्मनी के विचारशी के कारण हुआ। उन्होंने कला की आत्मतत्त्वमय रूप में व्याख्या कर एवं आलोचना की आत्मतत्त्वमय विधि की नींव रखी है। उनकी नींव आधुनिक विचारकी एक विधियों का आधार बाने लगा। यह-अन्तर्भाव प्रकाश प्रसार एवं प्रसार सीखना के द्वारा। ऐंग्लैण्ड में प्रथम प्रकार आलोचना के नींव पहले बाद जर्मनी में बिना। जो लोकहित करने के केन्द्र का भी प्रमुख रूप था। इस आलोचना का उद्देश्य केवल गुण दोषों का मिलान मात्र न बल्कि यह किसी रचना की उसके आत्मतत्त्वमय रूप में प्रत्यक्ष विवेक एवं की व्याख्या करना समझा जाने लगा। इस आलोचना प्रणाली में आलोचकों की इस बात का ध्यान दिया कि वे किसी रचना की आलोचना करने के पूर्व उसकी समझना में पहले नींव आत्मतत्त्वमय-गुण के बारे में प्रकाश करें और तब प्रत्यक्ष एवं प्रमुखों का प्रत्यक्ष करें, जिसकी प्रकाश के अनुसार वे इस रचना विवेक का गुण बिना हीना और उसी में आलोचना का गुण प्रवेश करने कर सकें। यह आलोचना प्रणाली रचना के आत्मतत्त्वमय रूपों की व्याख्या कर कर देती है। यह प्रकाशों में विवेकमय आलोचना की नींव लोक-हित का है नही पायी। यह आधुनिकता का समझना की प्रकाश गुण की विवेकमय की आलोचना कर कर एवं लोकतत्त्व देती है। यह विवेक को आत्मतत्त्वमय और प्रत्यक्ष-लोकता के विवेक के प्रत्यक्ष प्रकाश देती है। इस आलोचना के अनुसार आत्मतत्त्वमय आलोचना प्रणाली में आलोचना की प्रकाश गुण प्रवेश के अनुसार देती है।^१ इस आलोचना प्रणाली का जन्म देती देती है।

१. "Introspective criticism will examine literature as the source of pure investigation, looking for the truth of art in the practice of artists and treating art like the rest of nature as a thing of continuous development which can be fully grasped only when examined as it is actually engaged in the actual making without interference from criticism."

—बोल्डन: आत्मतत्त्वमय 'एक आलोचनात्मक न न पायी लोक-हित' (एक रचना) के प्रमुख

एकता सम्भव हो सकती है। एक दूसरा को इस व्यक्तिगत परिभाषित आलोचकों की समझौतों के सहित नहीं हुआ। एक वर्ष के अनुसार भारतीय साहित्य-कारों का समग्र साहित्य की है, साथ ही उनके द्वारा बना बना साहित्य की सीमा है, पर दूसरा यह स्वीकार नहीं है कि अन्तिम में 'साहित्यिक कृतत्व' 'वैयर्थ्य' या 'वैयर्थ्य' का मत नहीं हो सकता और न दूसरा समझ नहीं है कि साहित्यिक और साहित्यिक विर के साथ नहीं के समर्थ। एक समझ के यह भी विचारोंकी स्वीकृति नहीं समझता। यह भी यह भी सीमा करता है कि इन साहित्यकारों के साथ का अनुसार करता हो साहित्य, पर यह नहीं सीमा करता कि किस तरह के साहित्य की एकाता सम्भव हो नहीं है। एक अनुसार के साथ यह भी साक्षात् है कि साहित्यिक विचारों का भी समग्र विचार साक्षात् साहित्य, उन्नी सीमा साहित्य-कता सम्भव हो सकती है।

विशेषकर आलोचना समझती का एक हीम को यह हुआ कि पहले साहित्यिकता के क्षेत्र में सीमा, रूप, साधारण एक या भारतीय साहित्यिकता के साहित्य साहित्य की सीमा के साहित्यों का समग्र रूप दिया और उन्हें साहित्य के समग्र रूप ही स्वीकार कर में स्वीकार करने के लिए साथ दिया। साहित्य में समग्रता आलोचना समझती के साथ ही साहित्यिकता आलोचना समझती का समग्र दिया साहित्य। यदि ऐसा नहीं होता है तो यह दिया में दोषोंके निर्देशात्मक आलोचना का सीमा रूप नहीं होता।¹ जो भी हो साहित्य के समग्रता की सीमा ही समझ देने के कारण यह आलोचना समझती समझती हो सकती है। समग्रता की सीमा ही समझ देने वाले का कारण इन आलोचकों के यह समझ कि साहित्य साहित्यिकता और साथ साथ एक विचार विचार साहित्यिकता है। साहित्य, साहित्य और साहित्यिकता के साथ के विचार साहित्य साहित्यिकता साहित्य समग्र रूप समझती नहीं है। समझती साहित्यिकता के साथ उन्हें साहित्य का समझी समझती नहीं सीमा

1 "In the interest of judicial criticism itself we have to recognize that the judicial criticism must always be preceded by the criticism of interpretation. The judicial criticism can be of any value which is not been preceded by the criticism of interpretation."

विषय का प्रस्ताव और इसविषय पर जांचकर्मी पर लक्षितप्रतिक्रिया को यहाँ विवरण दिया जा रहा है। इसमें मैं जांचकर्मी, जाहानगीर प्रशासक इसविषय और विधायकजी के बीच बातचीत का प्रामाणिक प्रस्ताव प्रस्तुत किया जा रहा। जाहानगीर प्रशासक ने जो निर्देश देने की कोशिश एक प्रस्ताव की प्रकृति ही जानी नहीं है वह सब है। अब एक सीई प्रशासक प्रस्ताव करने यहाँ कहा, एक एक चक्र करने जाहानगीर पर जो प्रकृति प्रस्ताव है। जाहानगीर प्रशासक ने निर्देशात्मक जाहानगीर का प्रस्ताव सब प्रस्ताव है।

वैसाख अस्मीचना प्रणाली

[illegible]

मिया गया है । राजनयिक युद्ध में अपने कई विचार इसी आधार पर मिले थे ।

अनुभववादात्मक आलोचना-प्रणाली

मिनीशन, मिलेनम एवं मरीनम के आधार पर जो सभी मिली रचना की आलोचना की अनुभववादात्मक आलोचना प्रणाली बनी है । यह आलोचना की सबसे दुरानी प्रणाली है । इस प्रणाली के अनुसार यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया जाता है कि प्रचित रचना का वैज्ञानिक अनुसंधान संभव है, जिसका अनुसरण कर आलोचना सांख्यिक नियम विधियों का निर्माण कर सकती है, परन्तु इस प्रणाली के अनुसरण में सबसे अनुभववादात्मक अनुसरण की गई कि वैज्ञानिक प्रयोगों में जो स्पष्टता ही सम्भव है, पर साहित्य के क्षेत्र में यह स्पष्टता संभव नहीं है । जिसका के क्षेत्र में किसी को अनुमान की आवश्यकता नहीं होती । यहाँ की और जो विचार प्रविष्टाचार ही होते, चीज नहीं । पर साहित्य के क्षेत्र में प्रत्येक व्यक्ति की अपनी अनुभवात्मक अनुभववादात्मक होती है, जिसके आधार पर ही व्यक्तियों के काल-काल पर विचार प्रतिपादित की जाती है । अपनी इसी विचार-वस्तुओं एवं चार-पाशों के आधार पर किसी रचना के सम्बन्ध में ही कोई प्रस्ताव निर्धारित होता ।

रचनावादात्मक आलोचना-प्रणाली

जब आलोचना किसी रचना के क्षेत्र को अपनी अनुभूति के आधार पर प्रत्येक एक प्रयोग विचार और प्रयोग रचनात्मक प्रति की प्रति करता है, फिर भी आलोचना का साहित्य आलोचना के साथ प्रतिनिधित्व होता है, तो इसे रचनावादात्मक आलोचना (creational criticism) कहते हैं । नैप्यु मरीनम के अनुसार रचनावादात्मक साहित्य ही अनुभववादात्मक आलोचना है । आलोचना की सभी अनुभववादात्मक अनुभूति को प्रत्येक रूप से प्रत्येक की प्रति की प्रत्येक के क्षेत्र विचारवादात्मक की रूप देता साहित्य और प्रत्येक प्रयोग प्रयोग करने साहित्य कि रचनावादात्मक प्रतिभा को प्रयोग, प्रयोग ही प्रयोग प्रयोग ही प्रयोग ही । प्रयोग प्रयोग के अनुसार रचना और आलोचना के कोई वैज्ञानिक प्रयोग नहीं है और साहित्य के क्षेत्र में के एक प्रयोग के प्रयोग है । एक ही प्रति के साहित्य में अपने रचना और आलोचना-प्रयोग की ही प्रयोगवादात्मक प्रतिपादित की । किसी रचनावादात्मक प्रति की रूप प्रयोग प्रयोग ही प्रयोग ही प्रयोग ही । जब रचनावादात्मक प्रतिपादित की ही ।

हिन्दी आलोचना का विकास

हिन्दी आलोचना के इतिहास का यदि वर्गीकरण किया जाए तो वह इस प्रकार किया जा सकता है :—

१. आरम्भिक काल
२. काल काल
३. आधुनिक काल

कालि मुक्त आलोचना के यह वर्गीकरण काल युगियों के भी भिन्न है, पर किसी आलोचक के नाम के यह वर्गीकरण काला वर्गमा लक्षणक है। हिन्दी साहित्य की एक सीढ़ी ऐसा आलोचक आधुनिक काल में चलाने वाले में खोजनी पड़े है जो अपने युग की अपने व्यक्तित्व में कलक लगे और जिसकी सीधिलता एवं समीक्षा एक सामान्य मान के रूप में प्रतिबिम्बित हो सके। यहाँ एक कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल भी ऐसा करने में सफल हो सके। हिन्दी का कोई आलोचक ऐसा नहीं हुआ है और न है, जिसकी तुलना रिचार्ड्स, रॉस, लॉ गालि के की जा सके। यदि यह कहा जाय कि साहित्य काल के बाद आलोचना ही सबसे अच्छा करी हुई है तो असुविधा न होगी। अतः आलोचना काल का यह वर्गीकरण मान्य होगा साहित्य।

आरम्भिक काल साहित्य का निर्माण काल है। इस युग के पहले साहित्यिक विचारों का निर्माण हो पाया था। आरम्भिक और उसके बाद मध्यम काल किनेली इस युग के दो ऐसे आविष्टक हुए हैं जिनमें हिन्दी साहित्य के सर्वमान्य उच्चतम निर्माण में अनेक अग्रगण्य योगदान प्रदान किया है। इस काल में अपने साहित्य जीवन पर आदर्शवादी एक सुधारवादी अग्रगण्य आचार्य की और साहित्य का अपनी की क्षमता में समर्पित होने का प्रयास कर रहे थे।

अनुसिद्ध कर्मों में किया। उसकी 'शिव और विष्णु' के सम्बन्धित तुलनात्मक समीक्षा आत्मक प्रसिद्ध है। इस पर उन्हें दुराचार की ख्याति हुई। अलंकार, रस, छन्द, विचार आदि काष्ठमय के सम्बन्धित विषयों के साथ साथ गद्य, पद्य कर्म, कवि-व्यक्तित्व एवं मूल्य-मीमांसा के कर्मों में आहिता की गरज करता इस युग की हिन्दी आलोचना की बहुमुखी देव है। हिन्दी आलोचना के विकास में काव्य, गद्य विवेचनाएँ विचार्य हैं।

एक अवधि की बाद एक अवधि तक विकास करने में सुख की और उसके बादकालीन आलोचकों का भी आत्मक बहुमुखी योगदान रहा है। आत्मतन्त्र एक निरन्तर-रक्त समीक्षा (Intermittent criticism) का आत्मक सुख को ने हो किया। समीक्षात्मक एक वैविध्यिता आलोचना पद्धतियों का भी कर्म की वस्तुता रही। साथ में हुआ। विदेशी कला मीमांसा एवं वास्तुशास्त्रीय वाचनों के सिद्धांतों की समीक्षा करीका एक आलोचना करने की आरंभ करने का मोह सुख की की हो है। एक काम में आलोचना किसी की हो एवं कभी हो नहीं हो, उसे एक अत्युत्तम कर्मिण की हो में लक्ष्य करिका : "आलोचना का आरंभ में एकका बहुत नहीं हुआ है। फिर एक काली और आलोचना पद्धतियों का विकास लोक-आत्मक कर्मिण का करता। एक कालों का अनुभव एवं आत्मतन्त्र का नहीं हो करता। उसे सिद्ध एक प्रकार की वस्तु लोकक काल्य नहीं कर्म का करी। यहाँ पर एक वह लक्ष्य कर दिया बहुत है कि एक आलोचना रक्त में, बहुत वह की हो लक्ष्य हो ना न हो, साथ का की हो आत्मक नहीं है।" सुख को ने आलोचनात्मक समीक्षा पद्धतियों की भी आलोचना करे हुए वह कहा है : "आलोचनात्मक समीक्षा की हो लोक-मीमांसा की वस्तु हो नहीं। न साथ के लोक में कर्म की हो हुआ है, न साथ के लोक में। उसे समीक्षा का आलोचना बहुत हो करने है। किसी कर्म की आलोचना की अनुसिद्ध पद्धति वैकला है कि एक कर्म के साथ की, उसके साथ की लोक-मीमांसा करे में बहुत विविध, अनुसिद्ध नहीं कि आलोचना की आत्मतन्त्र और कर्मिण पर-विचार द्वारा लक्ष्य करीकाल्य करे।" इस प्रकार एक युग के आलोचकों ने विवेचना की वस्तु की अधिक लक्ष्य किया और की हो साथ कर्म लक्ष्य हो के नहीं कर्म का

१. आलोचनात्मक सुख : साथ में अनुसिद्ध, पृ. १५

२. आलोचनात्मक सुख : हिन्दी आहिता का इतिहास, पृ. ५२५

सही है। वेद विरोध की शक्ति नहीं है। अविद्यात्मक अज्ञान, आत्मोपमा विद्या विरोध करने के बजाय स्वयं ही दिग्दर्शन की शक्ति प्राप्त नहीं है। किसी ऐसे आत्मोपमा अधिष्ठान के अभाव में, जो दृष्टाद्विष्ट का आकाश करने एवं दिग्वा अद्यत कर सके, आत्मोपमा आत्मोपमा की शक्तियों के बीच-बीच होते हुए ही एक प्रकार से दृष्टि है। उसकी शक्ति के साथ ही अज्ञान की शक्ति विपरीत होती है, फिर भी अविद्यात्मक अज्ञान है। अज्ञान काटने नहीं है कि आत्मीयता में आत्मोपमा अविद्या का, अज्ञान अज्ञान का, अविद्यात्मक अज्ञान का अभाव है। आदित्य के शीतल की दृष्टि के इतने नहीं अज्ञान की शक्त और बड़ा ही शक्ति है ? आत्म अधिष्ठान आत्मोपमा विद्या नहीं, अविद्या नहीं है। अविद्यात्मक अज्ञान नहीं विद्यमान विद्या नहीं है। हर बात में अपने ऐसे का अभाव एक प्रकार से शीतल ही शक्त है, नहीं अज्ञान का शीतल, अज्ञान ही का न ही। 'आधुनिक विद्या अधिष्ठान' : 'दोषिष्ठान की धुनिया', 'विद्या अधिष्ठान की धुनिया' तथा 'विद्या अधिष्ठान की शक्ति' जैसे अज्ञान शक्तियों के अविद्यात्मक अज्ञान का भी विद्या विरोध करने अज्ञान अज्ञानिष्ठ की शीतल की अज्ञान अज्ञान विद्या का अज्ञान अज्ञान ?

१-सामग्रीर अभाव निमित्त

[illegible]

आलोच्य कृति को उलझ में ही आलोचना की दृष्टिची बखारी जाती थी ।
हिन्दी की भी इस तरह बड़ी सीख होती थी ।

हिन्दी की केवल कुछकमी सिद्धान्त व्यवस्थित हैं । परन्तुपक्ष
आलोचकों को जल्दसे निर्देशीय स्वीकार कर लिया था और उन्होंने इस
के तर्कों का परिचालन किया करते थे । यदि कभी के समय में अपना पक्ष
है कि कविता का यह दावा है कि वे जिस बात कोपक्ष जिस काल का वर्णन
करते हैं, उसका वह अपने आलोचकों में लेकर उसे ऐसा करते हैं कि वे
है कि वह कविता को सुनने के यह एक सुनने वाली के द्वारा में अपना ही
पक्ष है । इसके पक्ष होता है कि हिन्दी आलोचकों के और साथ में नहीं
की स्थिति अनिवार्य रूप से स्वीकार करते थे । इसे पक्ष जल्दसे ही पक्ष
लिखा है । अपना विचार है कि कविता को वह करने का करने पक्ष चाहिए ।
कोपक्ष नहीं का बड़ी बखार नहीं होता । हिन्दी की के इस समय की दूसरी
बखारी में इस प्रकार भी पक्ष लिखा था करता है कि यदि कविता वह
कृति नहीं बखारी ही यह सुननेपक्ष है । अपना जल्दसे बखार है । इसी
समय में बात करता है कि कविता क्या है ? इसका उत्तर हिन्दी की के
एक प्रकार दिया है । की बात एक बखारपक्ष और निर्देश के रूप में कविता के
द्वारा एक तरह तरह की बात कि सुनने वाले पर अपना कुछ न कुछ बखार
करते हैं, इसी का नाम कविता है । यही हिन्दी की द्वारा कविता के
समय में ही यह यह बखारपक्ष बहुत समय का सुन नहीं है फिर की इसका
पक्ष होता ही है कि के साथ में अनेकाल और अनेकालपक्ष के
समय में ही ही और साथ बखारपक्ष एक उत्ति-निर्देश पर की बात के है ।
पक्ष के कविता का वह बहुत होता है । इसे हिन्दी की के एक प्रकार
स्वीकार किया है । कविता की अलोचनपक्ष अपने के कि वह कविता पक्ष
बखारपक्ष की बड़ी बखार है । किसी अनिवार्य का एक वर्णन करते हैं
ही-ही का ऐसे नाम पक्ष चाहिए, की सुनने वाले के अपने अनिवार्य
का पक्ष का बीच है । एक प्रकार हिन्दी की अलोचनपक्ष की कविता का
पक्ष एक बात के अलोचन बहुत पक्ष किया है । के पक्ष की कविता
के कि वह आलोचन नहीं करते । अपने विचार के आलोचन लोगों के कविता
और पक्ष की एक ही बीच बखार पक्ष है—यह पक्ष है । कविता और पक्ष में
नहीं पक्ष है की अपने की की पक्ष (Pitahy) और पक्ष में है । किसी
अलोचनपक्ष और अनिवार्य पक्ष, पक्ष का बहुत का नाम कविता है,

हिन्दीभाषी की भाषीयता जैसी उभर एवं बढ़ रही है साथ भाषा-
व्यवस्था और राजनीति के भी पूर्ण गहरी भी । वे चाहते हैं आधुनिकता, विप्लव
एवं बहुपक्षीय युक्ति के हिन्दी भाषा-विचारविमर्श का समर्थन करें । अपनी आलो-
चनाओं में भी उन्होंने अपना पूर्ण साक्ष्य करने का प्रयत्न किया है । अनुवाद
उन्हीं के सम्मेलन में अपने लेखकों का प्रलेख करते हुए वे कहते हैं, 'एक भाषा
की कविता का दूसरे भाषा में अनुवाद करने वाली की यह बात हमला उन्हीं
परिचित । कुछ अनुवाद करना बुरा नहीं का सम्मान करना है, क्योंकि अनु-
वाद के द्वारा हमने पूर्ण का शीत-शीत परिचय व हमें के कारण हमने अपनी
की युक्ति में यह हीम हो जाता है । एलेक्सिस् हिन्दी सुभाष का अनुवाद करने
के पहले अनुवादकों की अपनी योग्यता पर विचार कर लेना चाहिये । सम्मानक
है । हम ही यह है कि जो सम्मान नहीं है, नहीं सम्मान अनुवाद करने के समर्थ
ही करता है ।'^१ वास्तव में यह हिन्दी के क्षेत्र में अपना प्रतिपक्षीय सुभाषाओं
का । उनका मत था कि हिन्दी भाषा की आधुनिकता करने में आधुनिक परि-
पक्ष हीम के अपनी सम्मानक करके ही हमने हमारी आधुनिकता बढ़ी होगी ।
विप्लव की कविता का विप्लव करने का विचार ही दूर रहा, जल्द हमने
हमारा परिचय हिन्दी भाषा के समर्थन अपनी कविता कविता का प्रसार
किया है ।^२ हिन्दीभाषी की भाषीयता का एक अनुभव एलेक्सिस् विचारविमर्श का भी
था । अपनी आलोचनाएँ एवं उभार के समर्थन में करते हुए ही भी कि कवि
की यह करना चाहिये—कवि की यह व करना चाहिये ।

हिन्दीभाषी के भाषा की संसारों और सुभाषों की दिशा में आधुनिक
प्रयास किया । आधुनिकता हमारी अनुप्रासों के विचारप्रयत्न, हमने के उचित
प्रयोग एवं आदर्श भाषा विचारों की ओर में संसार करने सम्मानक कविता का
लेखकों का विचारविमर्श किया करते थे । जल्द हिन्दीभाषी की भाषा बन गई
और हमने प्रभावों है । वे सम्मान किया भाषा के विप्लव सम्मान बढ़ी के ।
अपनी भाषा में बहुपक्षीय एवं सम्मानक है । वे चाहते हैं कि कविता की दूसरी
भाषा का प्रयोग करना चाहिये, जिससे अपनी कविता सम्मान में सम्मानक
जैसी की सम्मान में का सम्मान । उनमें अनुवाद विचारप्रयत्न सम्मान सम्मान होगी

१ आदर्श अनुप्रासों का नाम हिन्दी : प्रकाश संसार, (१९९०), प्रकाश १०

२ आदर्श अनुप्रासों का नाम हिन्दी : विचारविमर्श कविता कविता की युक्ति

[illegible][illegible]

विचार का कार्य भी समझा जाता। उपन्यासी का काम है।^१ यह स्पष्ट है कि शुभ की जो दृष्टि में उपन्यासी का समझा बहुमुखी तथा है। सामाजिक रूप विचार में सामाजिक-सुधार-परिचालन करने का कार्य उपन्यास ही का समझी है, ऐसा समझ विचारत का। पर सामाजिकता तथा सामाजिक-राजनीति के स्वीकार करें, यह उन्हें स्वीकार न का। यद्यपि किता है, स्पष्ट समझ में हमारा केवल यही बहुत है कि हमारे सिद्ध उपन्यासकारों को केवल सामाजिक-रूप समझें द्वारा सामाजिक समझें केवल ही न समझा चाहिए, सामाजिक-परिचालन केवल सामाजिक दृष्टि की समझी चाहिए। ... हमारे उपन्यासकारों की दृष्टि के सर्वप्रथम जीवन के जीवन समझी दृष्टि बहुततर प्रकार के समझी चाहिए, केवल सामाजिक समझी की समझी की केवल ही न समझा चाहिए। साहित्य की समझ-कीति के समझ बहुत चाहिए, तथा उनके समझी दर ही न समझा चाहिए।^२ शुभ की जो दृष्टि हम के समझ में समझी की समझ ही यही समझी। साहित्य सामाजिक के विचार ही दृष्टि बहुत है, तथा ही समझ सामाजिकता की समझ-दृष्टि ही समझी है और सामाजिकता की समझ के तथा समझ है। इसका समझात यह समझी है कि उपन्यासी में सामाजिक का समझ न ही और विचारत रूप के ही, पर केवल सामाजिक-सुधार। यह समझ रूप का समझ सामाजिक-कार्य का समझात रूप समझ है जो सामाजिक सामाजिक समझ की समझ ही समझी है। विचारों के समझ में समझा यह है कि यदि यह समझी का समझी की समझी है जो समझ तथा की समझी है। समझ की समझ समझ का विचार समझी में ही समझ अधिक समझ होता है। समझी समझी के विचार समझी के विचार समझात समझ ही समझात है। सामाजिक है कि शुभ की न केवल समझी की समझ की ही दृष्टि के समझ है। समझी पर समझ के समझ का की समझ समझात है, समझी और समझी विचार समझ समझी दृष्टि है।

समझ के समझी के समझ में शुभ की का समझ है कि समझ के समझी में यह समझ समझी के विचार समझ समझी समझी है यह समझ-समझ समझ का समझात रूप समझात है और समझी के विचार समझ समझी

१ सामाजिक सामाजिक शुभ हिन्दी साहित्य का समझात, (समझी),

[illegible]

६. आचार्य पद्मनाभ सुखः द्वितीयां शतिकां च रचिताम् (पृ. १०१)

1000 1000 1000 1000

नर्म विषय और नर्म व्यक्तित्व के बहुत सारों के साहित्यिक जी जी समुचित अनुभवों के अधिक मात्रा में भरित होती है। अतः कभी-कभी साहित्य में व्यंग्यपूर्ण चेष्टा नहीं की है और न कभी कभी साहित्यक व्यंग्यपूर्ण के विरुद्ध होने का प्रयास किया है। सैद्धों का प्रयास करते हुए कभी साहित्यक समुचित में व्यंग्यपूर्ण, व्यंग्यपूर्ण और व्यंग्यपूर्ण का समुचित प्रयास-योग सम्भव किया है। अतः कभी कभी जी-जी-जी का अधिकतम अर्थ-व्यंग्यपूर्ण का प्रयास नहीं किया है, यह कभी प्रयास का परिणाम है।

— ११ —

साहित्य रूप : आलोचना सिद्धान्त

विभिन्न आलोचकों के आलोचना के बहुत, अलग-अलग विचार-विचार एवं प्रकार यदि पर-परसे उभार लाया जा चुका है, इन्हीं सब ही परिकल्पों एवं आलोचनात्मक-आलोच के सिद्धान्तों की भी सम्यक् समझ का प्रथम विचार होता है। इस अवसर में विभिन्न साहित्य कालों के आलोचना सिद्धान्तों की सम्यक् समझ का प्रयत्न किया गया है, जिससे आलोचना सिद्धान्त सभी पूर्ण रूप में समझ हो सके। इन साहित्य कालों के आलोचना सिद्धान्तों की सम्यक् समझ से किसी आलोचना के विचार का पूर्ण रूप समझने में यकीन आसुपडा प्राप्त होगी। विभिन्न साहित्य काल एवं प्रकार हैं—

१—साहित्य

२—काव्य

३—उपन्यास

४—कहानी

५—चित्रण

६—पद्य

इन्हीं की सम्यक् समझ का ही काम है—किसी काव्य, उपन्यास और कथा-कथन। सभी प्रकार के कालों का ही काम है—काव्य और कथा-कथन। इन कालों के आलोचना सिद्धान्तों का विवेचन करने के लक्ष्यों ही किया गया है।

साहित्य का स्वभाव

साहित्य क्या है, उसका स्वरूप किस प्रकार का है, इस विचार पर आलोचकों के सिद्धान्तों का सभी प्रकार-प्रकार विवेचन प्रस्तुत किया गया है। साहित्य का स्वरूप बहुत-सा प्रकार का मिलता है। अलग-अलग ही साहित्य

साधारणतः कर्माणि तत्र वर्ति ।¹ एवं कर्माणांशो मे प्रथम एव हो जाता है कि साहित्य का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक होता है । मेरे विचार मे साहित्य मानवीय जीवन का वह अधिकतम भाग है जिसका मानव संवेदन, शक्ति अनुभूति मेरे एवं कर्माणांशो तत्र प्रथम होता है । यथा तबही यथा अधिकतम साहित्य मे ही पायी है ।

कविता शीतल

[illegible]

1. "Literature is the magic which summons out of the stranger of man, across himself to life on the beyond of language"

होता है।' यह दुर्घट के पक्ष का समर्थन है कि साहित्य साहित्यकार के व्यक्तित्व के व्यक्तिगत रूप में अभिव्यक्त रहता है।

साहित्य और समाज

साहित्य साधक- समाज का प्रतिबिम्ब होता है और समाज चित्र-मूर्तियों एवं छद्मों की का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए साहित्य कभी भी समाज के समक्ष नहीं रह सकता। समाज की सम्पत्तियाँ, समुदाय एवं सम्पत्तियाँ में ही साहित्यकार अपने जीवन-आशियों की राह खोजता जीवन जीता है, अतः सामाजिक व्यवस्था के अर्थों में समाज उसके चित् चरित होता है। यही कारण है, वह सम्पदा, समुदाय ही का नयन, वह सब सामाज्य रूप के समक्ष होती है कि सामाजिक जीवन का कुछ न कुछ समझ उस पर समाज रहता है। ऐतिहासिक साहित्य (काल-समय-समाज आदि) की किसी कुछ विशेष की संस्कृति, जीवन एवं समाज के अन्तर्गत जीवन की समस्त व्यवस्था कहते हैं, यही समझ की सामाजिकता का संसार ही रहता है। समुदाय साहित्य और समाज का सम्बन्धवशित सम्बन्ध होता है। किसी देश का समाज ही समाज प्रतिबोध होता, यही का साहित्य की समझ ही प्रतिबोध होता। किसी देश के साहित्य की समझ यही के सामाजिक रूप विधान के सम्बन्ध में समुदाय समाज का रहता है। अतः साहित्य और समाज के सम्बन्ध परस्पर प्रभावित सम्बन्ध होता है।

काव्य

काव्य और साहित्य

साहित्य में काव्य का अन्तर्गत रहता है। समस्त साधकों में ही काव्य की समझ समझ समझ रहता है कि काव्य एवं साहित्य की प्रतिबोधनी सम्बन्धित रूप रहता है। अतः समुदाय काव्य एवं साहित्य में कोई कुछ-कुछ सम्बन्ध नहीं रहता है। इसीलिए जो प्रतिबोध समझ काव्य की ची है, यही साहित्य की ची। इस कारणों में समझ, समुदाय, और समझ आदि समुदाय है। अतः समझ समझ रूप के समुदाय चित्र-चित्र समझ चित्रों का सम चित्र सम ही साहित्य है। यही समझ के समझ रूप में ही साहित्य है, समझ के यही समझ है। किसी देश विशेष में किसी समझ विशेष में समझ समझ रूप चित्र रहता है। यही यह देश के समझ समझ के साहित्य समझ है।

वास्तविक विचारणी के ली बहुत कम कहा है¹ विचारों जलने लगने की प्रक्रियाओं में कहा जा सकता है।

1997 1998 1999

साधन का क्यापणन : साधन के साधन, सीधे ही साधन है, और उनके साधन-साधन साधन है : साधन के साधन-साधन के साधन का साधन है—

१. राज्य विधान
२. अल्पसंख्यक विधान
३. राज्य विधानसभा
४. अल्पसंख्यक
५. विधान

समय के लिए हम की सीमा-वाक्यकता होती है। यदि सभी चीजों के अनुचित प्रकाशन के लिए अनुकूल हम का वाक्य अनुकूल है। यह और यह में अन्तर-वर्तमान होती है, समकालीन हम हम की वाक्यकालीन सीमा

1. (i) "Poetry is simply the most delightful and perfect form of utterance that human words can reach."
—**श्री अरवि**
- (ii) "A poem is that species of composition which is opposed to works of science by proposing for its immediate object pleasure and not truth."
—**श्री अरवि**
- (iii) "Poetry in a general sense may be defined to be the expression of the imagination, poetry is ever accompanied with pleasure."
—**श्री अरवि**
- (iv) "Poetry is to be defined as an art, the fundamental principle of which is imitation—the imitation being through the medium of language."
—**श्री अरवि**
- (v) "By poetry we mean the art of employing words in such a manner as to produce an illusion on the imagination the art of doing by means of words what the painter does by means of colour."
—**श्री अरवि**

बतलाने से कि जलवायु का बहुत अधिक कुछ विषय होता है, जो व्यावहारिक रूप से विज्ञान की समझ का ही समझ है। जलवायु विज्ञान का जलवायु है और जलवायु विज्ञान का भी समझ का ही समझ है।

काय के विषय

जल, वायु, पृथ्वी और जलवायु के विषय पर काय के समझ काय के विषय विज्ञान का ही है। जलवायु विज्ञान में काय के जल विज्ञान विज्ञान का ही है—

१—जलवायु ।

२—जलवायु ।

३—जलवायु ।

काय के काय के ही जलवायु विज्ञान का ही है—जल वायु का ही है। जलवायु विज्ञान के जलवायु विज्ञान का ही है जलवायु विज्ञान का ही है—

१—जलवायु (जलवायु) ।

२—जलवायु (जलवायु) ।

३—जलवायु ।

४—जलवायु ।

५—जलवायु ।

जलवायु के जल, वायु, जलवायु के जलवायु विज्ञान का ही है जलवायु विज्ञान का ही है जलवायु विज्ञान का ही है जलवायु विज्ञान का ही है जलवायु विज्ञान का ही है—



होना चाहिये तथा और एवं आदिपूर्व वाक्यांशों को बहुत कम होना चाहिये ।
 कृष्ण को चारों ओर से घेर ले । ऐसी में ऐसा नहीं समझा किया
 है और बहुधात्म के अन्तर्गत एवं अन्तर्गत होनी उत्तर को वाक्यांशों का विवरण
 वाक्यांश बना है । विवरण में यह प्रतिपादित किया है कि बहुधात्म में
 वाक्य वाक्यांशों अन्विष्ट होनी चाहिये, उसमें बहुधात्म होनी चाहिये, अन्तर्गत
 एवं अन्तर्गतवाक्यांशों होनी चाहिये, तथा वेब वाकि वाक्यांशों का अन्तर्गत होना
 चाहिये । एवं अन्तर्गत वाक्यांशों का विवरण है कि किन्तु वाक्यांश-
 विवरण के कारण ही किसी वाक्य वाक्यांशों बहुधात्म की वजह से अन्विष्ट
 नहीं किया जा सकता । उत्तरी सेती की भी बहुधात्म के अन्तर्गत होनी चाहिये
 तथा अन्तर्गत एवं बहुधात्म अन्तर्गत का ही अन्तर्गत बहुधात्म में होना चाहिये ।
 एवं और अन्तर्गत होना एवं वाक्यांशों का अन्तर्गत होनी उत्तर है । अन्तर्गत की
 बहुधात्म के अन्तर्गत एवं बहुधात्म वाक्यांशों का विवरण वाक्यांशों बना है
 तथा वाक्यांशों वाक्यांश एवं अन्तर्गतवाक्यांश बना है । एवं अन्तर्गतवाक्यांशों के
 वाक्यांश एवं अन्तर्गत बहुधात्मों का अन्तर्गत एवं उत्तर विवरण किया जा
 सकता है—

१. बहुधात्म का अन्तर्गत विवरण होना है तथा अन्तर्गत अन्तर्गतवाक्यांशों
 होनी है । एवं एवं अन्तर्गत अन्तर्गत वाक्यांशों है ।
२. वाक्य की वृद्धि किन्तु तथा और एवं वाक्यांशों होना चाहिये ।
३. अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत है । वाक्यांशों का भी अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत
 किया जा सकता है । अन्तर्गत अन्तर्गत एवं बहुधात्मों वाक्यांशों का ही
 विवरण होना चाहिये ।
४. सेती की बहुधात्म के अन्तर्गत होनी चाहिये । अन्तर्गत अन्तर्गत एवं
 अन्तर्गतवाक्यांशों होनी चाहिये ।
५. अन्तर्गत वाक्यांशों की अन्तर्गत वाक्यांशों का विवरण होना चाहिये ।
६. अन्तर्गत वाक्यांशों के अन्तर्गत अन्तर्गत वाक्यांशों चाहिये ।

अन्तर्गतवाक्यांशों के अन्तर्गत में अन्तर्गत एवं अन्तर्गत विवरणों द्वारा ही
 वह अन्तर्गत की अन्तर्गत वाक्यांशों वाक्यांशों, जो अन्तर्गत होना है अन्तर्गत अन्तर्गत
 अन्तर्गत नहीं होना । अन्तर्गत ही अन्तर्गतवाक्यांशों में अन्तर्गत का और, वाक्यांशों एवं अन्तर्गत
 वाक्यांशों अन्तर्गतवाक्यांशों वाक्यांशों वाक्यांशों है । अन्तर्गत ही अन्तर्गतवाक्यांशों के अन्तर्गतवाक्यांशों
 अन्तर्गतवाक्यांशों एवं अन्तर्गतवाक्यांशों के अन्तर्गतवाक्यांशों वाक्यांशों वाक्यांशों है तथा अन्तर्गतवाक्यांशों
 वाक्यांशों के अन्तर्गत एवं अन्तर्गत वाक्यांशों का विवरण अन्तर्गतवाक्यांशों वाक्यांशों वाक्यांशों है । अन्तर्गत

[illegible]

हृदय गहर से गहरी कुल गहर चलीकुटी हृदय छलने के
 विजिगी के वसन्त कलह में बस। विजिगी के वसन्त
 हृदय गहर की रोमांच के वसन्त हृदय के वसन्त
 लीला ना वसन्त वसन्त का वसन्त हृदय के वसन्त
 वसन्त वसन्त वसन्त के वसन्त वसन्त वसन्त
 वसन्त वसन्त वसन्त के वसन्त वसन्त वसन्त
 वसन्त वसन्त वसन्त के वसन्त वसन्त वसन्त
 वसन्त वसन्त वसन्त के वसन्त वसन्त वसन्त
 वसन्त वसन्त वसन्त के वसन्त वसन्त वसन्त

— **Journal of the American Medical Association**, 1991, 265: 1117

1



क्यों की वह बाल, बाल की हरिणी की बाल बाल है।
बाली बाल, बाली बाली बाल बाल बाल है।

—**General Office Hours:** Monday, 9:00 a.m.

[illegible]

सिडिपिड बालसार्द यही क्षमा मिया की कान्त,
मी यही की सिडिपिड कान्त की मेड बा मिलाया ।

— 1995 : 1994-1995, 1996-1997

असह्य, हम हैं बहुत विषम हो उभार हो बिना बाधा है—एक
साधनीकाल के सा में और दूसरे अस्तित्व दोषों के सा में। असाधनीकाली कविता
है अविशाल सा है बहुत विषम साधनीकाल के सा में ही बिना है। असाधनी
हो असाधनी हो उभार है—

असह्य, हम हैं असाधनी-असाधनी,
असाधनी असाधनी असाधनी,
असाधनी असाधनी असाधनी,
असाधनी असाधनी असाधनी,
असाधनी असाधनी असाधनी,
असाधनी असाधनी असाधनी

—असाधनी असाधनी

x

x

x

x

असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी,
असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी,
असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी !

—असाधनी : असाधनी असाधनी

असाधनी असाधनी के सा में असाधनी असाधनी असाधनी के उभार है।
असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी के सा में असाधनी असाधनी असाधनी
असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी
असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी
असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी

असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी
असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी
असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी
असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी
असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी
असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी
असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी
असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी
असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी
असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी
असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी
असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी

—असाधनी असाधनी असाधनी असाधनी

[illegible]

कनेक्ट लाइन पर भी मैंने क्या कहा, वो सारा सब कहानी है, उसी की-
क्या कहना चाहता था कि है, कि जब मैंने भी कहा है, कनेक्ट लाइन है, फिर कनेक्ट

which it could not exist. That is the highest there comes to all novels, .. It runs like a backbone or may I say a superform, for its beginning and end are arbitrary—

—(१) एका-पादादि : सुश्लेष्यता यति न यतिना, (अथवा १०१५००),
अथवा, अथवा, अथवा

1 "The most simple form of prose fiction is the story which records a succession of events, generally marvelous—"

—सुप्रीम कोर्ट: न.सु.अ.अ. १०३०/२०१७ (समाप्त २९.०६.१७)
समाप्त २९.०६

© 2004 Blackwell Publishing Ltd *Journal of Internal Medicine* 255: 103–110

प्राणी की समझता भी अपनी ही समझियत होती है।^१ यह सुनिश्चय के विधि-
वाद है। परिचयविषय की बातों की समझि होती है—विशेषतयात्मिक और
सामयिक : विशेषतयात्मिक समझ में अन्तर्भावनात्मक अर्थों अन्तर्भाव के बीच
अन्तर क्षेत्रों पर प्रकाश है कि उसके पास ऐसे हैं, अपनी के विशेषज्ञता है,
के सुनिश्चय है, तथा वे जाती हैं, या कुं है। यह सामयिक रूप के अन्तर्गत
अन्तर्भावनात्मक अर्थों प्राणी की अन्तर्गत क्षेत्रों है, तथा परिचय अर्थों अपने
अर्थों, अन्तर्भावनात्मक अर्थों प्राणी की अन्तर्गत क्षेत्रों के अन्तर्गत होती है। अन्तर्गत
अन्तर्भावनात्मक क्षेत्रों के प्राणी अर्थों की अन्तर्गत क्षेत्रों है—कि वे अपने
प्राणी की विशेषिक नहीं करता। वे अन्तर्गत अर्थों की अन्तर्गत है, और वे
अपनी अन्तर्भावनात्मक अर्थों प्राणी की अन्तर्गत है।^२

प्राणी की अन्तर्गत क्षेत्रों है : अन्तर्गत प्राणी अर्थों और प्राणी अन्तर्गत
प्राणी के अन्तर्गत अन्तर्गत, अन्तर्गत, अन्तर्गत अर्थों अन्तर्गत प्राणी की अन्तर्गत
अन्तर्गत है। अन्तर्गत अन्तर्गत के अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत है, और
अन्तर्गत के अर्थों अन्तर्गत की अन्तर्गत होती है। अन्तर्गत की अन्तर्गत अन्तर्गत
अन्तर्गत की अन्तर्गत अन्तर्गत है। यह अर्थों अन्तर्गत अर्थों कि अन्तर्गत अन्तर्गत
के अन्तर्गत और अन्तर्गत की अर्थों। 'अन्तर्गत अर्थों' में अर्थों अन्तर्गत अर्थों है।
अन्तर्गत अन्तर्गत 'अन्तर्गत अर्थों', 'अन्तर्गत', 'अन्तर्गत', 'अन्तर्गत - अर्थों अर्थों'
में अर्थों अन्तर्गत अर्थों है। अन्तर्गत अन्तर्गत की अर्थों अन्तर्गत अर्थों अन्तर्गत
अर्थों के अर्थों की अन्तर्गत अर्थों के अर्थों की अर्थों अर्थों है। अन्तर्गत अन्तर्गत
की अर्थों की अर्थों के अर्थों अर्थों के अर्थों अन्तर्गत अर्थों है। अन्तर्गत
अन्तर्गत की अर्थों के अर्थों अर्थों के अर्थों के अर्थों है। अर्थों की अर्थों, की अन्तर्गत

- १ "A world is a world of art, with its own laws, which
are not those of daily life, and that a character is a
character in itself when it lives in accordance with such
laws."

—ई- अर्थों अन्तर्गत : अन्तर्गत और अन्तर्गत, (अन्तर्गत
अन्तर्गत), अन्तर्गत, अन्तर्गत

- २ "I do not control my character. I am in their hands
and they take me where they please."

—विशेषिक अर्थों अन्तर्गत : अर्थों अन्तर्गत अर्थों अर्थों
अर्थों अन्तर्गत, अर्थों अर्थों

१—काला

२—काली

काला की परिचयना छोड़ दूँ अन्तर्मुखि में लिखा है—

कालसु हि कालम् एताद् अज्ञानस्योपशमयन् ।

अज्ञानं वयम् कालसु हि वा पलायति कीदृशम् ॥

आलोचक काल में जो काला जाती दूर तक जाती जाती है, उसे पलायन कहते हैं । इससे विपरीत काली आलोचक काल में कुछ दूर तक कर ही समाप्त हो जाती है । इसकी परिचयना आनुसंगिक में दस प्रकार दी गई है—

कलं लोकस्यमते कर्तुमिः परार्थं जगत् केशवम् ।

अनुसंगेन दीक्षयत् एकरी वा विनिदिशेत् ॥

द्वितीयकाल के आधार पर कलसु के तीन विद लिखे जाते हैं—

१. कलाल—देखी कला, की प्रतिरूप, दुष्टता का बीच सम्बन्ध हो ।

२. कलाल—देखी कला, की पूर्णतया आलोचक हो ।

३. विद—देखी कला, कलं काला पर द्वितीयकाल का अधिकार हो ।

आलोचना—कलं आलोचना पर जो विचार कर केना चाहिए ।
आलोचक आचार्यों के कलं की विमर्शिता अस्मात् काली है—

१. आरम्भ—इस आलोचना में सबसे किसी बात की ऐसी की हीन दृष्टि उत्पन्न करता है । अन्तर्मुखि के अनुसार—“अज्ञानस्य वयम् अज्ञानस्य विमर्शते अज्ञानं आलोचना से अज्ञानस्य उत्पन्न है ।” कलं कला का आरम्भ काल का उत्पन्न है । ‘अनुसंग’ में उत्पन्न का अनुसंग की ऐसी की दृष्टि उत्पन्न करता कलं आरम्भ है ।

२. उत्पन्न—कलं दृष्टि की दृष्टि से विद आरम्भ की जो कलं करता है, उसे उत्पन्न कहते हैं, अर्थात् उत्पन्न में उत्पन्नता की उत्पन्न की दृष्टि उत्पन्न की । यह वह कलं आरम्भ की है कलं विद उत्पन्न दृष्टि उत्पन्न कर की उत्पन्न उत्पन्न के उत्पन्न से उत्पन्न उत्पन्न के उत्पन्न उत्पन्न की उत्पन्न । कलं उत्पन्न दृष्टि के विद उत्पन्न उत्पन्न उत्पन्न उत्पन्न । कलं उत्पन्न उत्पन्न है । उत्पन्न-उत्पन्न के उत्पन्न है—“उत्पन्नस्य उत्पन्नस्य उत्पन्न उत्पन्न-उत्पन्न :” अर्थात् उत्पन्न उत्पन्न की उत्पन्न के विद उत्पन्न का जो उत्पन्न उत्पन्न उत्पन्न उत्पन्न है, कलं उत्पन्न है ।

‘मूर्धं बीजं समुत्पत्तिं नामार्थैश्च सम्यगा,
अस्मिन् द्वारता त्वम बीजारम्भ समन्वयात् ॥’

अर्थात् मूल स्त्रीय के विभिन्न अवस्थाओं, यही एवं मनुष्यों की उद्-
भवात्ता होती है ।

३ उद्भिदुत्पत्तिः—इसमें अस्मिन् मूल का सामक उद्भिदुत्पत्ति मही
समय रहता है। यही अवस्था : इसकाकार के अनुसार, ‘अस्मिन्महामही
वर्धते। त्वम उद्भिदुत्पत्तिं यत्ने ॥’ अर्थात् मूल का मूल मूल यही बीज बीज
मूल ही और बीज मूलम् । इसकी विधि किन्तु बीज मूलम् के बाद यही
जाती है ।

४ मूर्धं बीजं—उद्भिदुत्पत्ति में मूल बीजों का प्रकाशन होता है,
अथवा महीद्वि में मूल मूल प्रकाशन होता है, यही ही वे विधीमयों की
ही जाती हैं । अथवा के अनुसार, ‘मूर्धं मूल मूल मूल मूल मूल मूल ॥’
अर्थात् उद्भिदुत्पत्ति में मूर्धं मूल मूल मूल मूल मूल मूल मूल मूल, विधी-
मय एवं मूलमय होता रहता है ।

५ विधीः अस्मिन्—यह मूर्धं अस्मिन् की अस्मिन् बीज का अस्मिन्
विधीय होता रहता है। अथवा मूलमय की विधी में मूल मूल मूल मूल मूल
मूलमय ही जाती है एवं विधी अस्मिन् रहती है । अथवा मूलमय के ही मूल-
मय अस्मिन् विधी है और मूल की विधीय ही ही रहती है—

‘मोदेनामूर्धमस्मिन् मूलमयः वा विधीमयः ।

मूर्धं विधीय बीजार्थं यो मूलमयः अस्मिन्महः ॥’

अर्थात् बीज का अस्मिन् विधीय होता रहता है और मूलमय के मूल,
मूल, विधीय एवं मूलमय मूल मूल मूलमय मूलमय होता रहता है, एवं
विधी अस्मिन् होती है ।

६ विधीय अस्मिन्—अथ मूल मूल मूलमयों का अस्मिन् विधीय मूल
उसी मूल मूलों का मूलमय की अस्मिन् के मूल विधीय अस्मिन् में मूलमय
ही रहता है । अथवा मूलमय के अनुसार—

‘बीजमहो मूलमयः विधीयः मूलमयः ।

मूलमयमूलमयः मूल विधीयः मूलमयः ॥’

मूल मूलमय अस्मिन् है । इसमें बीज की विधीय मूलमय के
होती है ।

कवीरकथन

साधारण आधुनिकता में कवीरकथन की भी कथासूत्र का ही एक खण्ड माना जाता है। कवीरकथन की उत्पत्ति होना चाहिये एवं उसी की अभिव्यक्ति के परिणाम होता चाहिये। कवीरकथन के लिए बहुत जगह का उपयोग आवश्यक होता है। क्योंकि किसी एक घटक का सांसारिक कवी विज्ञान या बुद्धिमान नहीं होते, अन्ततः कवीरकथन के भी जादू की आवश्यकता पड़ित हो जाती है। कवीरकथन की शक्ति में भी कथासूत्र का निधानन किया जाता है :

१. समय—देते कवीरकथन, किसे कवी सांसारिक सुखों से।

२. समय—देते कवीरकथन, किसे कवी सांसारिक नहीं सुख पाते।

३. निमित्त समय—देते कुछ निमित्त काय हो सुख करते हैं।

साधारणतया—यह भी कवीरकथन का ही एक भाग होता है, जो अन्ततः बहुतपूर्व से है। जब काय आकाश की ओर फैले हुए देखा अभिमान करता है, माने वह कुछ कुछ चला है और सब ही वह उसी की सुन, सुदृष्टता की है तथा सब ही सब सबों का उत्तर भी देता है। ही ही साधारण साधित करते हैं।

वाक्य

कवीर के अभिमान होता है, वाक्य में काय केले माने कथाकार, वा अभिव्यक्ति। एवं वाक्य का समय बहुत होता है। अभिमान वाक्यों में वाक्य के लिए कोई अभिव्यक्ति नहीं है। वाक्य कथन कवीर की ही होता है, निमित्तकवीर की दूसरी वही वाक्य के अन्त में वाक्य के कुछ होता है। दूसरे वही वाक्य का कवीर की अभिव्यक्ति नहीं की जाती, केवल वाक्य का वाक्य किसे माने है। वाक्य का कवीर की ही होता है जब काय के वाक्य की विकाश हो और निमित्त कवी वाक्य की ही करता है। निमित्त कथाकार का अभिमान हो, जो अभिव्यक्ति और करता है। वाक्य है देखा वाक्य निमित्त-कवीर नहीं हो करता। वाक्य दूसरी वही वाक्य अभिव्यक्ति का है वाक्य कवीर के ही अभिव्यक्ति होते हैं। वाक्य की भी अभिव्यक्ति का अन्ततः कवीर का वाक्य में निमित्त है—

देखा निमित्त कथाकार की वही अभिव्यक्ति।

साधारणतः अभिव्यक्ति कथाकार निमित्त कथा।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

सुखी सुखस्य सुखी सुखस्य सुखस्य सुखस्य ॥

[illegible]

सायब के पार भेद होते हैं — ‘भैर’ बहुधा समित सायबोवासी-
मन्—‘अर्ध’ बीरोबाग, और समित, बीरोबाग और बीरोबाग पार
प्रकार के सायब होते हैं ।

१. **बीरीकटास कायम**—इस मण्डि के मालदार हुँदो है, मालदार मण्डि और मालाबीकटास के मालदार ही वह मिकली हुँदो है । मालाबीकी के मालदार मण्डि माला का में बाबा का देवता हुँदो है । बीरीकटास कायम के मुर्गी का इलेन काही इन मालाकायम का मालदार है—

¹ *सुप्रसन्नोऽपि सुप्रसन्नः सुप्रसन्नः सुप्रसन्नः ।*

पृष्ठ संख्या: 11

अमीर की सेवाएँ बालक में कायीछा, कायीछा, दुःख काये
 दुःख होते हैं । जहाँ कायीछा होते हैं, वहाँ कायी छाना वहाँ के वहाँ दुःखीछा
 बालक कायी है ।

१. **वीरगणित भाषण**—इस भाषण के आधार में अन्धकार की वीरगणना की होती है, यह भाषण विचारगति की बहुत गहन भाषण होती है। यह भाषण है, "विचारगति की वीरगणना: अन्धकार की वीरगणना" अर्थात् वीरगणित भाषण विचारगति की वीरगणना है, अन्धकार की वीरगणना है और यह वीरगणना है।

१-सीधे जलाने या नक-इसके अन्तर के यात्रा के सम्बन्ध में जलान की यात्रा, कभी-कभी एक जलानवा होती है। इसके सम्बन्ध में बहुत कुछ है—

“आत्मन्येव भुक्तं भुङ्क्ते श्रीशक्तो विचारयित्वा” अर्थात् यह आत्म-सम्पन्न मान लेता है तथा आत्मनः का हीन बोधो का होना है।

४. **लोरीयन सभक**—यह सबसे विख्यात लोरी का सभक होता है, महा ही मान्यता होता है, सभकान के गुरुगारी, बुद्ध, लोरी एवं विष्णुसभक गरी मान्य होता है : इनके सभकान के सभक है :

परिचित्य परीक्षित हो सके। पात्रों का चरित्र का तथा बहुत ही और उनके चरित्र-चित्रण के लिए उपप्रासकार को संकेत प्रदान एवं सहायक प्रदान है। इसके विपरीत कहानी में एक ही चरित्रहीन संवेदन को अलग-थलग कर के परीक्षित किया जाता है। पात्रों की संख्या भी एक से भी अधिक नहीं बढ़ती, उनका चरित्र-चित्रण भी सीधे में ही किया जाता है, इसीलिए कहानी का एक-एक घटक मार्मिक, व्यक्त्यात्मक एवं समर्थ होता है।

कहानी की एक विशिष्ट परिभाषा देना कठिन है। कहा गया है कि कहानी में किसी ऐसी छोटी घटना का वर्णन होता कहिए कि उसे एक ही शेष में पूर्णतः पढ़ा जा सके परन्तु अन्य प्रमाण पूर्ण और अधिक होता कहिए।^१ या भी कहा गया है कि कहानी में केवल एक ही मुख्य होता कहिए और उसे सर्वोत्तम रूप में एक ही कहानि की पूर्णता के लिए प्रस्तुत होता कहिए।^२ एक दुबित का कहना है कि कहानी में एक कथा होती कहिए। घटनाओं के परिप्लवों वाली का संभव होता कहिए, आत्मकथित रूप से पर-वीक्षण का मुख्य होता कहिए और संकेत की अभिव्यक्ति होती कहिए।^३ एक दूसरे मानक का यह है कि कहानी किन्तुम पुरातन के सामान्य होती है, जिसमें कारण एक सत्य का आधुनिक स्वरूप होता है।^४ एक आधुनिक

1 "A short story is a narrative short enough to be read in a single sitting, written to make an impression complete and final in itself."

—हर्बर्ट स्पेंसर

2 "A short story must contain one and only one informative idea and that the idea must be worked out to its logical conclusion with absolute singleness of aim and directness of method."

—विजय कृष्ण कृष्णन : एक इंग्लिशमन दू द लॉरी लॉरी

सिन्ड्रेयर (सन् १९५०) कागज, पृष्ठ ११९

3 "A short story should be story, a record of things happening full of incidents and accidents, with unexpected developments leading through suspense to a climax and satisfying denouement."

—एर ह्यू गेस

4 "A short story is just like a horse race. It is the start and finish which counts most."

—एन पी

उपले विद्याभ्यास पाठ्यो को एक समीक्षित आत्मन को ही बाह्यिक होती है ।^१ आत्मन में वह एकता-व्यक्तिमत्ता को प्रकाशमयीता में व्युत्पन्न होती है ।

व्युत्पत्ती विज्ञान का दूसरा महत्वपूर्ण उल्लेख पांच एवं बहिर्य विभाग है । सम्भवतः यदि हम धीरे-धीरे ही पांच उनके केन्द्राकार हैं और बहिर्य-विभाग कक्षा आधार । यों ही पांच विज्ञान यों के विद् यादें, एक सम्बन्ध में आने के महाजीवता के विद् कीर्ति सम्भव नहीं है । वह अपने पापी को प्रकाश के विद् कीर्ति यों के यों के सम्बन्ध है । यदि वह सम्भवशील हो, वह विज्ञानशील । हाँ, पापी के सम्बन्ध में सम्बन्ध में हीन नहीं सम्भवता होती है । व्युत्पत्ती का ही वह पापी को पूर्ण सम्भवशील होता बाह्यिक और व्युत्पत्ती की वृत्त कक्षा के साथ प्रकाश पूर्ण सम्भवता होता बाह्यिक । दूसरी बात वह कि पापी को पूर्ण बहिर्य एक प्रकाश होता बाह्यिक और तीसरी बात को ही पांच विद् यादें, में सम्भव हो । सम्भव सम्भव ऐसा नहीं होता बाह्यिक कि पाठ्यों की वह बहिर्य होने के कि सम्भविक रूप में ही ऐसे पांच होती ही नहीं । पांच को प्रकाश के होती है—वैज्ञानिक-वीर्यविक एवं सम्बन्ध । वैज्ञानिक वीर्यविक पाठ्यों का सम्बन्ध एक प्रकार विज्ञानिक होता बाह्यिक कि वे

- 1 "A skilled literary artist....having conceived, with deliberate care, a certain unique or single effect to be wrought out, he then invents such incidents, he then combines such incidents—as may best aid him in establishing this preconceived effect. If his very initial statement not to the overthrowing of this effect, then he has failed in his first step. In the whole composition there should be no word written, of which tendency, direct or indirect, is not to the one pre-established design. And by such means, with such care and skill, a picture is at length painted which leaves in the mind of him who contemplates it with a kindred art, a sense of the fullest satisfaction. The idea of the tale has been presented undiscovered because undisturbed; and this is an end attainable by the novel."²

—दुसरे एमिल को

विशिष्टा सम्पत्तः ही और उन्हें दुरुष्ठा ही दुरुष्ठाता जा सके । इन पापों के परिणामरूप के अवशिष्ट भयान्ता की आत्मरूपता ही ही है, पर मनी-मनी भयान्ता की दुरुष्ठा इन पापों के भयान्ता की अद्वैत, शाश्वत ही अस्तित्व बना देती है । आत्मता पापों के लक्षणरूपीकरण में विनाश की कोई परिभाषा दुरुष्ठाद नहीं होती, क्योंकि ये दुरागे अपने ही मन के होते हैं और पापनों को कोई आत्मता के कोई परिभाषा नहीं होती । इन पापों के परिणामरूप में अद्वैत-भयान्ता के स्थान पर भयान्ता की अनुपस्थिति के साथ विनाश जाता है । आत्मता पापों को जो ही क्षीयमान ही बनती है—एक ही में विनाश जाता भयान्ता अद्वैतता होता है, वे वैश्वविश्व प्राप्त होती हैं । दुरागे में ही किसी रूप का क्षति का क्षीय-विनाश करते हैं, वे शाश्वत प्राप्त होती हैं । यह अन्तर बहुत ही वाचस्पत्य है कि परिण-विधान में अद्वैतीकार की विभिन्न भयान्ता की भयान्ता होती है । अद्वैती का आत्मता अद्वैतता होता है, अतः उसके में एक के एक भयान्ता में पापों का पूर्ण परिणामरूप करता पड़ता है । परिण-विधान के लिए आत्मता पर पदविधि का उपयोग किया जाता है—कर्मण, कर्मण, कर्मणरूपता तथा भयान्ता ही शाश्वत, कर्मण पदविधि में ही अद्वैतीकार भयान्ता और के ही पापों के परिणाम की अन्तः परिणामरूपों का क्षति कर देता है, और उनके सम्पत्त में कुछ की अनुपस्थिति नहीं रहता । कर्मण पदविधि में विनाश नहीं कुछ भयान्ता कर्मण के होता है किन्तु उनके साथ साथ का सम्पत्त होता है । यह पापों के परिणाम के सम्पत्त में अन्तः कर के कुछ की नहीं रहता । कर्मणरूपता पदविधि में ही साथ कर्मणद्वारा भयान्ता किन्तु अपने साथ कर्मणों के सम्पत्त के ही पापों का परिणामरूप कर देते हैं । भयान्ता के द्वारा परिण-विधान करने की पदविधि में विनाश करने साथ की एक विधि बना है शाश्वत होता है और यह विधि में साथ का जो आत्मता होता है उसके पापनों की साथ ही अनुपस्थिति द्वारा पापों के परिणाम की अन्तः करता है । आत्मता अद्वैती में अद्वैतीकरण के अन्तः के पापों के आत्मता भयान्ता की अन्तः कर अपने परिणाम की अन्तः किया जाता है । पापों की पदविधि है—विशेष परिणामरूप विनाश अपने अन्तः करने पापों के आत्मता भयान्ता का विनाश करता है । आत्मता-परिणामरूप, किन्तु पाप अपने पापों आत्मता विनाशविधि का विनाश करता है और आत्मता अद्वैती द्वारा विनाशरूप, विनाशरूप साथ साथ कर्म-विनाश करने अपने कर्मणों को अन्तः कर अपने परिणाम की अन्तः करता है ।

विकास किसी विकास का सज्जित निरूपण ही नहीं होता, बल्कि विकास के सम्बन्धित तथ्यों में विकास के सांस्कृतिक तथ्यों का उल्लेख भी शामिल करते हैं। ऐतिहासिकता इसकी एक बहुत विशेषता होती है।^१ एक बड़ी परिभाषायों पर विचार करने के बाद हमें बहुतों का मत है कि विकास के विकास के अर्थों का उल्लेख होता है। विकास का ही विकास किसी का विकास होता है, जिसमें हमें पूर्ण अवधारणा होती है। विकास का (development) ही का अवधारणा होता है। विकास के लिए सुसज्जित होती, एक विचार-उपलब्ध, समीक्षा की विकास एक विकास करने का पूर्ण का अवधारणा होता है।

विकास के उपकरण

जो कोई रूप के बहुत का विकास है कि विकास में किसी विकास की विकास किसी अवधारणा के विकास करता है, यह पूर्णता अवधारणा बहुत है जो हमें किसी विकास का विकास नहीं करता बहुत पर विकास विचारों के विकास अवधारणा के विकास विकास के विकास में बहुत विकास है जो विकास का है किसी विकास में का है। बहुत विकास विकास विकास कि एक अवधारणा के विकास का ही विकास नहीं है कि किसी विकासकार विकास एक विकास का है एक अवधारणा का अवधारणा करने विकास में का है। का विकास ही है कि है विकास अवधारणा किसी विकास में का है। विकास के विकास विकास है।

१. धर्मिका—हमारे विकास की सांस्कृतिक का है विकास, हमें एक विकास विकास पर विकास विकास होता है।

things often essentially trivial and yet making them for the moment interesting by the charm of speculative manner.”

—एम्. एम्. एम्.

“The essay proper or literary essay is not merely a mere analysis of a subject, nor a mere opinion, but rather a picture of wondering minds affected for the moment by the subject with which he is dealing. Its most distinctive feature is the speculative element.”

—एम्. एम्. एम्.

वर्तमान अंश आलोचक

डॉ० लक्ष्मी सागर दासगौड़

डॉ० लक्ष्मी सागर आजीव सदस्य भारतीय विद्या परिषद् १९१२ में चुना ।
 भारतीय में ही आलोचना के अलावा अन्य देशों के अग्रगण्य भारतीय विद्या-
 परिषद् के हिन्दी में १९००-०१ (१९१० में) चुना । वहीं के जी० विद् (१९४०) और जी० विद् (१९४५) करने के उपरान्त तीन और उपरान्त
 कार्य में सम्मिलित हैं । आज आज विश्वविद्यालय के जी० विद् और हिन्दी के
 सर्वप्रथम अध्यक्ष; राष्ट्रीय जी० विद् हैं । विद्यार्थी जीवन के ही भारतीय
 हिन्दी में रही थीं थी । इंटर के ही अपने परिवार वैश्वविद्यालय कुछ ही
 घण्टी दसगौड़ का भी जी और अपने परिवार के विद्यार्थी के कुछ ही घण्टी
 अधिकारी अधिक कार्य करने के । विश्वविद्यालय के जाने ही और करने का
 ही अपने अपने देश विविध रूप-रंगियों में प्रकाशित होने करने के । इन
 देशों के अपने भारतीय सम्प्रदाय, वैश्वविद्यालय, मुद्रा, अधिकार
 देशी एवं विदेशी का पूर्ण अधिकार विद्या है । लक्ष्मी सागर डॉ० हिन्दी आलो-
 चका अला में अपना आलोचनात्मक योग्य बना दिया । आज का हिन्दी के
 कुछ ऐसे ऐसे देश आलोचकों में सम्मिलित हैं विद्यार्थी आलोचना का अर्थ
 किसी भी का रूप के अधिकार अधिकार के करने का और, मात्र मात्र मात्र
 ही अधिकार और अधिकार के अलावा देशों के अधिकार के अधिकार के
 आलोचना के अलावा अलावा अलावा है । अब अब आलोचक विद्या-
 विद्या अला दसगौड़ प्रकाशित हो चुकी हैं ।

१—डॉ० विद्यालय अधिकार (१९४५)

२—आलोचना हिन्दी अधिकार (१९४५)

३—आलोचना की विद्यालय (१९४५)

४—आलोचना विद्या (१९४५)

५—आलोचना आलोचना (२) (१९४५)

- ५.—आलोच्य इतिवृत्त (१९३१)
- ६.—हिन्दी साहित्य का इतिवृत्त (१९४१)
- ७.—आधुनिक हिन्दी साहित्य की भूमिका (१९३५)
- ८.—हिन्दुई साहित्य का इतिवृत्त (दुन बँच के अनुवाद : १९५१)
- ९.—आगत दुर्दिष्ट (बीजिक आलोचनात्मक भूमिका अर्पित सम्पादन, १९३९)
- १०.—बी चलावली साहित्य (बीजिक आलोचनात्मक भूमिका अर्पित सम्पादन, १९३९)
- ११.—सिक्का मन्त्रीक (भूमिका अर्पित संग्रह, १९४०)
- १२.—आगीन हिन्दी कवचवहू (कलेक्शनार्थ भूमिका अर्पित सम्पादन : १९४९)
- १३.—आरतीय बार्ने बारा (दुन बँच के अनुवाद १९५१)
- १४.—आगीनबी चलावली (१९५५)

इनके अतिरिक्त यह रचनाओं में आलोचित आगे के कुछ लेखों की सूची की बहुत सीका है : 'हिन्दी विम-मेल', 'हिन्दी साहित्य बँच' आदि के भी आगे आलोचनात्मक लेख सम्पादित हुए हैं। सम्भवतः आप आगेआगे आलोचना आगत पर अन्य विषय रहे हैं।

'आधुनिक हिन्दी साहित्य' (१९४८) के समय बाद आधुनिक साहित्य सम्बन्धी आलोच्य का आगीन एक बीजिक विवेचन की आगत होना ही है, इनके बाद ही वैचारिक पद्धति पर किए गए सोचकार्य के परिणाम स्वरूप ऐसी नई रायों का परिणत हिन्दी साहित्य की आगत हुआ। इनके यह सभी एक पूर्णतया अस्वीकृत था। आधुनिक साहित्य की विस्तृत सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं सांख्यिक दृष्टिकोण के साथ विवेचन वक्त, आगत आलोचना, और आगत आदि साहित्यिक विचारों के वैचारिक विवेचन के बाद जो आगीन में हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में अनेक विरा और सोच हुए। उन्हें आधुनिक साहित्य का एक साथ अस्वीकार की आगत स्वीकार कर लिया गया।

'आधुनिक हिन्दी साहित्य की भूमिका' (१९३५) में १८५० से १८८० ई. तक के हिन्दी साहित्य का समय विस्तृत एवं वैचारिक सम्पादन है। यह साथ सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक दृष्टिकोण के हिन्दी साहित्य के इतिवृत्त में एक सम्भव महत्वपूर्ण आगत है। इनके इन विषय पर इतिवृत्तों में इस समय की पूर्ण अपेक्षा की गई थी और उसका अस्वीकृत रहे।

जी- भारतीय के विषय की परिचय देने हुए बताया है कि विषय उदाहृत बात होता है। उसकी सीधी और लंबी में समझ और समझनेवाला खुशी है। और इस पर विषय के लक्षित की बात खुशी है।^१ आज भारत में विषयों के बीच के बात समझने में बात होता है। जिसे हम खुशी, खिल, उदाहृत या उदाहृत नहीं कहें, उसे आज के विषय कहें हैं। यह वह भारतीय खुशियां हैं 'खिल' का विषय' जो का विषय उदाहृत कि वह बात है या उदाहृत खुशियां हैं भारतीय खुशियां और 'खिल' खुशी-खिल' जो। हम सभी को विषयों की बात के खिलित कर दें हैं। भारत में वह उदाहृत है। विषय में विषय नहीं विषय का लक्षित उदाहृत बात करता है। विषयों में बात खिलित का भी सीधी बात नहीं करता। विषय उदाहृत का उदाहृत खुशियां विषय के खिलित की बात करता होता है। यह उदाहृत जी- भारतीय की वह परिचय विषय के उदाहृत में सीधी हुई खिलित का विषय उदाहृत करता है। विषयों में उदाहृत और समझने का होता बात विषयों खिलित का खुशियां के खुशियां होता खिलित होता है।

सीधा कि उदाहृत बात है कि जी- भारतीय भारतीय का खिलित खिलित में खिलित के खिलित का खिलित करता है। उदाहृत के खिलित पूरे खिलित का खिलित करते हुए के खुशी है कि उदाहृत बात के खिलित-खिल, यह खिलित की खिलित, खिलित, खिलित, खिलित, खिलित, खिलित, खिलित और खुशियां खुशियां खुशियां के खिलित करता है।^२ यह 'खिलित' खुशियां खुशियां और 'खिलित' खिलित बात के खिलित है। खिलित खुशियां में खिलित और खुशियां की खिलित का होता खिलित होता है। उदाहृत खिलित वह खुशियां खिलित खिलित खिलित खिलित खिलित। यह खुशियां की खिलित खुशियां के खिलित है। खिलित का खिलित खिलित-खिलित के है की खिलित की खिलित में खिलित खुशियां और खिलित खिलित खिलित का खिलित होता है।^३ भारतीय खिलित की खिलित खिलित बात है कि खिलित की खिलित खिलित का खिलित-खिलित खुशियां

१ जी- भारतीय का खिलित : खिलित खिलित खिलित (१९९१)

खिलित, खिलित, खिलित

२ जी- भारतीय का खिलित : खिलित खिलित खिलित (१९९१)

खिलित, खिलित, खिलित

सौन्दर्य के रूप में स्वीकार किया है। यद्यपि और आचार के सम्बन्ध की स्वीकार करते हुए भी उसके प्रति व्यक्ति सम्बन्धीयता नहीं प्रकट की है। उन्होंने राज्य की सर्वोच्च लोकप्रियता नहीं स्वीकार की है। सामन्तवाद की उन्होंने सामूहिक सत्ता के सर्वोच्च विरुद्ध माना है। आलोचना के आधार पर युद्धों का निर्देश करते हुए बाहुनी का यह है, उसके पहले सामन्तीयता को विधान, सुविधान, कुलपट्टी और विपक्ष हीका 'प्रतिपक्ष', और विरुद्ध में हम युद्ध न ही उनकी सम्बन्धीयता के कार्य में हुए ही मान्य चाहिए। किन्तु सामन्तीयता के वे हम युद्ध हीमें, यह बहुत बहुत के आलोचना युद्धों का सर्वोच्च मान्यता है। आलोचना का युद्ध कार्य यह है कि यह सामन्तीयता के को उनके विपक्ष में सामन्तीयता के रूप में देते। किन्तु युद्ध का हम सम्बन्ध सामन्त के विरुद्ध हीका यह को युद्ध हीका उनकी सम्बन्ध विरुद्ध सामन्त सुद्धि में ही हीकी, उनके सम्बन्ध की सामन्तीयता के सम्बन्ध में विरुद्ध, यह बाहुनी के रूप यह को बहुत कार्य में किन्तु को ही सामन्त नहीं हीकी चाहिए। उनके अपनी सामन्तीयताओं में उन्होंने हम विरुद्धों का सम्बन्धपूर्ण सम्बन्ध किया है।

बाहुनी के विरुद्ध हम के सौन्दर्य की सर्वोच्च हीकी के ही सम्बन्ध यह है और उनकी का सर्वोच्च बाहुनी 'प्रतिपक्ष' के किया है। उन्होंने सामन्त और सामन्तीय विधानों का सम्बन्ध कर राज्य विधानों का अपने रूप के विरुद्ध किया है। उनकी लोकप्रियता हीकी में है। उन्होंने सामन्तीयता की सम्बन्ध का ही अपने किया है। उनकी मान्यता यह यह लोकप्रिय है। विधानों की सम्बन्ध, कुल-कुल और विधान के बहुत रूप के सम्बन्ध में उनकी कार्य को सम्बन्ध रूप के सम्बन्ध कार्य में युद्ध सम्बन्ध ही काय है।

बाहुनी कुलपट्टी राज्य

युद्ध युद्ध के सामन्तीयता में बाहुनी कुलपट्टी का बहुत सम्बन्ध है। 'सामन्त के रूप' तथा 'सामन्त' और 'सामन्त' उनके विरुद्ध सर्वोच्च रूप है, किन्तु बाहुनी सौन्दर्य और सामन्तीयता सामन्तीयता सम्बन्धों की सम्बन्ध है। कुलपट्टी का ही के उनके विधानों की सम्बन्ध के अपने विधानों की सम्बन्ध कार्य का सम्बन्ध किया है। उनके सामन्तीयता विधानों में युद्ध और सम्बन्ध के सम्बन्ध सामन्तीयता विधानों का सम्बन्ध है किन्तु यह कुलपट्टी का ही की लोकप्रियता की युद्ध

कहा है और 'पर एतत् काले मे' जल्दी जल्दी मिलियता है। इसका एक उदाहरण देमिडेल होता है, 'काल के वर्तन मे सुदृढता की का कारण परिपूर्ण आध्यात्मिकता जैसाई पर पूर्ण' कहा है।^१ केवल 'जीवन्मुक्तता' की अनुभूति काल के चढ़ी की है, बल्कि वास्तव में वे अनुभव आत्मवर्द्धितता प्राप्त हो मिलीविहृत होकर एतत्ता करने लगे हैं। जल्दिये एत की जो पुण्यभुवि कहाई है, जिस आत्मता और अनुभवता प्रभावपूर्ण का मिलीता किया है, पुनः प्राप्त की जो लक्ष्य, पीनियों का जैसा आत्मता और कृष्ण की और जल्दी पूर्ण का मिली-करण मिलियता है और एत की वर्तन मे जल्दी की आत्मवर्द्धितता और कृष्ण की जल्दी काल के साथ एक आत्मता आत्मवर्द्धितता पूर्णता, जल्दी आत्मता के साथ आत्मता और कृष्ण के आत्मवर्द्धितता के साथ आत्मता की आत्मता के जो प्रभाव आत्मता मिले वह है, वे काल की आत्म-वृद्धता और प्रभाव आत्मवर्द्धित के जोड़क है।^२ इसी प्रकार कृष्ण के आत्मता के आत्मता के एक प्रभाव पर वे कहते हैं, 'काल की कृष्ण के वह आत्मता आत्मता एक आत्मता और आत्मता आत्मता की कृष्ण पर जाता है। एतत् प्रभाव वह जल्दी मिलता कि आत्मता की अनुभूति में मिली प्रभाव का मिले ली। जल्दिये वह आत्मता की वह मे जैसाई की एक जल्दी आत्मता की आत्मता आत्मता मिले रहती है।' आत्मता कृष्ण की वह कृष्ण एत कृष्ण मिलियता सीता कहाई है। 'आत्म-कृष्ण मिलियता एत कृष्णता की मिलियता किता जोरी मिले बलि होती। जल्दी के जैसा, वे काल आत्मता का वह प्रभाव, एक कृष्ण की कृष्ण प्रभाव है। वह एतत् प्रभाव आत्मता वर्तन का एक प्रभाव जाता है। चढ़ी कृष्णता की मिलियता है।^३ इस प्रकार के मिलियनों के आत्मता की जो आत्मताओं की जो काल मे मिले है, जो वह आत्मता है। कि आत्मताओं की का आत्मता केवल आत्मता का एक ही जोड़क है। काल आत्मता मिलियता और आत्मता का एतत् कृष्ण, कृष्ण मिलियता प्रभाव का ही जैसा मे मिलियता है। आत्मता के आत्मता के एक वह आत्मताओं का आत्मता प्रभाव प्रभाव पर आत्मता की मे मिलियता की कृष्ण एत मिलियता प्रभाव का प्रभाव किया है।

आत्मताओं की वे कृष्णता की मिलियता प्रभाव चढ़ित का कृष्णता किया का मिलियता प्रभाव (मिलियता प्रभाव) कहा किया। चढ़ी-चढ़ी के आत्मता के प्रभाव के जो वह मिले हैं :—

१. अनुभूति आत्मता : सुदृढता, पृ. १६.

२. चढ़ी पृ. १६-१७.

५. बर्तन के आलोचना, सामाजिक और राजनीतिक विचारों आदि का समीक्षण

६. भाषा के जीवन संबंधी अध्ययन और समीक्षा का अध्ययन ।

इस प्रकार आलोचकों की ये सभी वर्तनीयें एक-आपसी की परस्परक्रियाकारी दृष्टिकोण से सम्बन्धित हों, आलोचना की अवधारणा की ओर ले जाने का प्रयास किया है । अपने विचारों को कटौति नहीं मिलती । के साथ अनुसृत किया है । पुनरावृत्ति के द्वारा होने के कारण इसकी सीधी अनुसृत और आलोचना है । कटौति प्रभावित कर आलोचना सीधी को सुनिश्चित करने का प्रयत्न नहीं किया है । पर कटौति-कटौति के कारणप्रकार के अर्थों का ही जहाँ है और अवधारणा का के सीधे प्रकार करने करते हैं । ऐसे लक्ष्यों पर अपनी आलोचना का अनुसृत प्रभाव हो जाता है और प्रत्यक्ष कोई अवधारणा का नहीं रह जाता । वैसावाद के सम्बन्ध में भी नहीं अपनी आलोचनाएँ पूरी अवधारणा की हैं । कटौति-कटौति तथा और अनुसृत के साथ ही अपनी आलोचना सीधी के अर्थों होने हैं । बूझ के अवधारणा हैं, परन्तु अपनी आलोचना सीधी का भी अवधारणा अपनी अवधारणा से सम्बन्धित हो रहा है । 'अनुसृत दृष्टिकोण' और वैसावाद ; आलोचना विवेक' से अनुसृत आलोचना सीधी के सीधे का प्रभाव होने हैं ।

बी० हजारी प्रसाद द्विवेदी

हिन्दी के आधुनिक आलोचनाओं में आलोचना की अवधारणा द्विवेदी का अत्यंत महत्वपूर्ण है । द्विवेदी काहित्य पर उनके अनेक महत्वपूर्ण कथन अवधारणा हुए हैं, जिसमें उनकी बहुत ही सीधे आलोचनात्मक अवधारणा का परिचय प्राप्त होता है । उनकी विचारों के भी अनेक महत्वपूर्ण अवधारणा हुए हैं । द्विवेदी अपनी अवधारणा के सीधे में सीधे हुए अवधारणा की ओर प्रभाव होने हुए कटौति प्रभाव किया है, जिस में अवधारणा का अर्थ का विवेकित करने हैं, इन सीधे का विवेक नहीं । केवल अवधारणा के बहुत और दूसरे का आलोचना महत्व के साथ ही एक ऐसे अवधारणा को अवधारणा रह जाती है जो बताते कि इन सीधे में के विचारों अवधारणा काहित्य के विचार अवधारणा से किया का अवधारणा हैं । अपनी अवधारणा का अवधारणा के साथ ही इन अवधारणा को अवधारणा रह जाती है कि अवधारणा नहीं की सीधे और ही अवधारणा कि विचार बर्तन से अवधारणा को अवधारणा का दृष्टि है, अवधारणा अवधारणा के सिद्ध सीधे विचार अनुसृत का अवधारणा है । इस अवधारणा अवधारणा नहीं की नहीं रह जाती है । अवधारणा में अवधारणा

पुनः आलोचना का अन्तही अन्त ही अनुसूच क्षेत्र पर हम में परिवर्तन हो सके है :

आन्तरिककरण के आकाश में भी डॉ० एमिड के विद्वान् विचारणीय हैं । अपने विचार के आन्तरिककरण यन्त्र की सबसे अनुसूचि का होता है । अनन्त वह कोई व्यक्ति अपनी अनुसूचि की इस प्रकार अभिव्यक्ति कर सकता है कि वह सभी के हृदयों के समान अनुसूचि प्राप्त करे जो परिवर्तनिक उपग्रह-सूचि में हम पाते हैं कि अपने आन्तरिककरण की सक्ति अधिक है । अनुसूचि सभी के होती है, सभी व्यक्तिगत पक्ष अधिकारीय व्यक्ति की कर लेते हैं, पण्डित आन्तरिककरण करने की सक्ति अपने नहीं होती, एकीकृत ही अनुसूचि और अधिकारी के होते हुए भी वह नहीं नहीं होते ।^१ आन्तरिककरण का कारण है माना का मान्यता होना । माना का सम्बन्ध अपने प्रयोग की सभी भाग-व्यक्ति पर निर्धार होता है और अधिकारी के सभी की सर्वप्रकार सक्ति का आधार है । मान्यता अनुसूचि । मान्यता सभी अनुसूचि में होती है इसलिए आन्तरिककरण की की सक्ति सभी अनुसूचि में होती है, अन्तः प्रयोग की विधि ही मान्यता नहीं । पण्डित आन्तरिककरण की विधि सक्ति सभी व्यक्ति के होती विद्वान् भाग-व्यक्ति विधि पर के अनुसूचि, विद्वान् अनुसूचि विधि पर के अनुसूचि । देता ही व्यक्ति माना का मान्यता होना कर सकता है—अनन्त अपने अनुसूचि सभी के पर पर कि अपने सभी की अनुसूचि ही देती सक्ति प्रदान कर सकता है कि के दूसरी के हृदय में भी मान्यता प्राप्त कर सके । देता ही व्यक्ति सक्ति है ।^२ लम्ब है डॉ० एमिड के अपने एक विद्वान् की मान्यता और संस्कृत मान्यता विद्वान् के पण्डित अनुसूचि के अपने विद्वान् की विद्वान् कर अपने सम्बन्ध सर्वविशाल के पण्डित विद्वान् है । अपने विद्वान् की अनुसूचि पण्डित सभी के मान्यता प्राप्त विद्वान् है तथा पण्डित और-संस्कृत मान्यतापण्डित विद्वान् का विद्वान् पण्डित विद्वान् कर पण्डित मान्यता विद्वान् की पण्डित के विद्वान् में अनुसूचि मान्यता प्राप्त है ।

१ डॉ० एमिड . पण्डितान् की अनुसूचि (१९४१) दिल्ली,
पृष्ठ ४०

२ डॉ० एमिड . पण्डितान् की अनुसूचि (१९४१) दिल्ली,
पृष्ठ ४१

परिशिष्ट : १

अनुक्रमिका (पुस्तक एवं पत्र-परिचय)

[illegible]

[illegible]

१३०

हिन्दी साहित्य का विकास

हिन्दी साहित्य का इतिहास

(सं० साप्ताहिक) १०३, ११०,

१११, ११३, ११४, ११५, ११६, ११७

हिन्दी साहित्य का इतिहास

(साप्ताहिक रूप में) १०१, १०८, १०९,

११०, १११, ११२

हिन्दी साहित्य की व्युत्पत्ति का १०, ११५

हिन्दी शिक्षा मन्त्री

११

हिन्दुई साहित्य का इतिहास

११०, ११५

हिन्दुस्तानी

१११

हिन्दुस्तानी का सम्बन्ध

१०४

हिन्दुई जीवन का विकास हिन्दुस्तानी का

हिन्दुई जीवन का विकास हिन्दुस्तानी

(सं०)

१०

हिन्दुस्तानी

१०३

परिभाषा : प

संयोजकता (वेधक)

[illegible]

